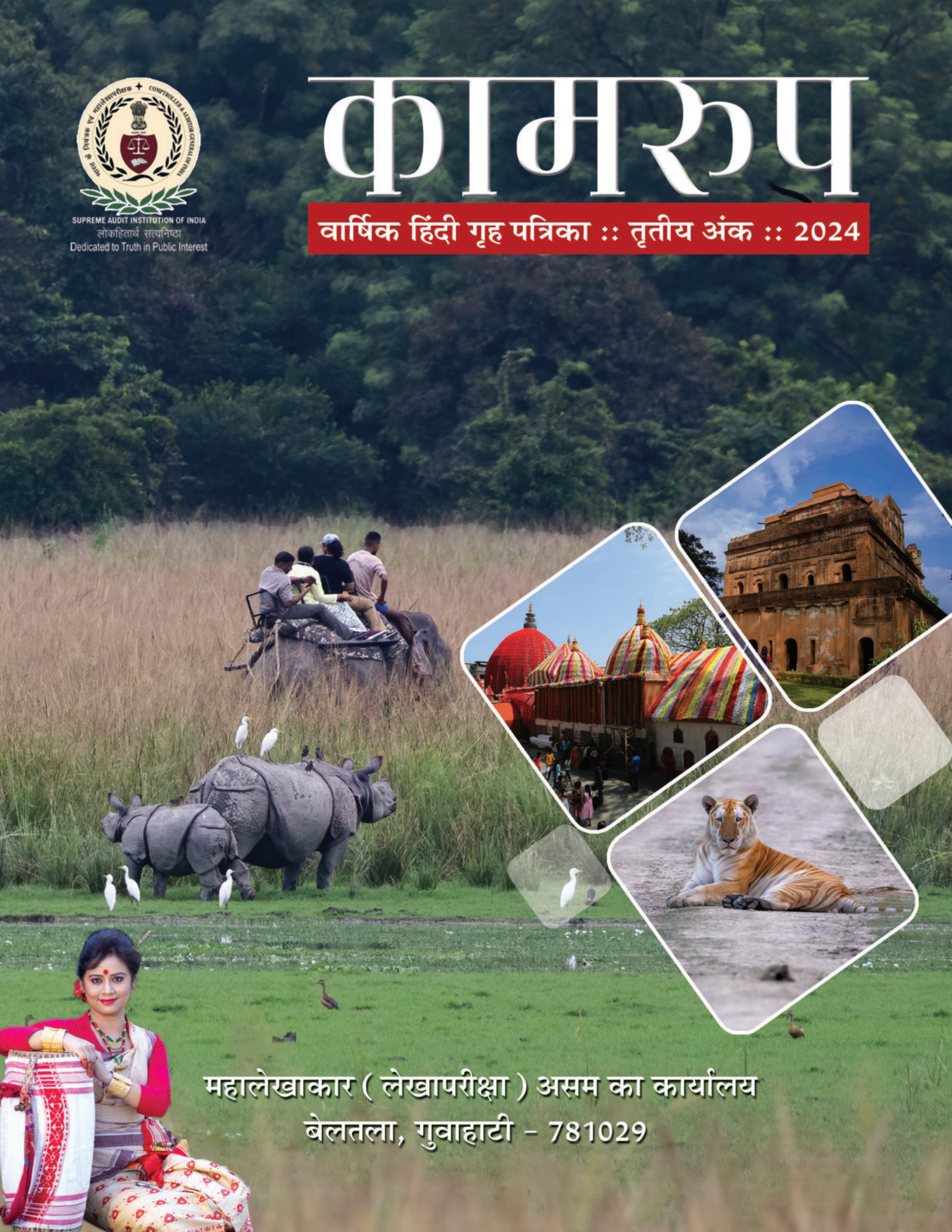




SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कामरूप

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका :: तृतीय अंक :: 2024



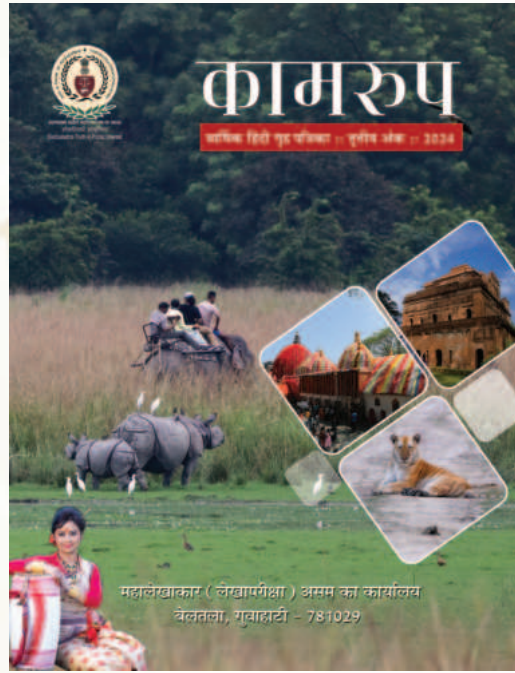
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम का कार्यालय
बेलतला, गुवाहाटी - 781029

हिंदी सप्ताह -2023 की कुछ झलकियाँ



कामरूप

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका
तृतीय अंक:: वर्ष 2024



प्रकाशक: महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम का कार्यालय
बेलतला, गुवाहाटी-781029

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुखपृष्ठ डिजाइन : श्री रत्नजीत चौधुरी, सहायक पर्यवेक्षक

पत्रिका परिवार

- संरक्षक :** श्री कुमार अभय
महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम
- परामर्शदाता :** श्री ज्योतिमय बाईलुंग
वरि. उप महालेखाकार (प्रशा. एवं ए.एम.जी-I)
श्री विनोद भुजेल
उप महालेखाकार (ए.एम.जी-II)
श्री सुजीत कुमार दास
उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III)
श्री बाप्पादित्य मजूमदार
उप महालेखाकार (ए.एम.जी-IV एवं एल.जी.ए.)
- मुख्य संपादक :** श्री विप्रजीत पुरकायस्थ
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (स्थापना एवं हिंदी कक्ष)
- सह संपादक :** सुश्री मौसमी चौधरी
हिंदी अधिकारी
श्री विकास भौमिक
वरिष्ठ अनुवादक
श्री दीपक जोशी
कनिष्ठ अनुवादक
श्री अभिनव कुमार
कनिष्ठ अनुवादक



हिंदी दिवस 2024

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्घरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

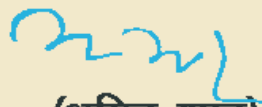
राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)



सत्यमेव जयते

संदेश



वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका “कामरूप” का तृतीय अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। यह अत्यंत गौरव एवं हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय से इतनी सुंदर पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। मैं यह आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका में समाहित कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरूचियाँ एवं रचनात्मकता प्रशंसनीय है। मैं रचनाकारों तथा संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके निरंतर परिश्रम से “कामरूप” पत्रिका के प्रकाशन की यात्रा सफल हुई है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

जय हिन्द ।

(कुमार अभय)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम



सत्यमेव जयते

संदेश



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्यालय द्वारा वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका “कामरूप” का तृतीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

इस पत्रिका में कार्यालय में वर्ष भर होने वाले कार्यक्रमों की झलकियों के साथ-साथ कार्मिकों के द्वारा विभिन्न विषयों पर रचित लेख, कहानी एवं कविता इत्यादि का प्रकाशन हुआ है। इसका मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ लेखन प्रतिभा को उभारना है।

मुझे आशा है कि इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका “कामरूप” अपने लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर रहेगी। पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई।

जय हिन्द ।

(ज्योतिमय बाईलुंग)

वरिष्ठ उप महालेखाकार

(प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I)



सत्यमेव जयते

संदेश



इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका “कामरूप” का तृतीय अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने में विभागीय पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे कार्यालयों में हिंदी के प्रति निष्ठा की भावना जागृत होती है। मैं पाठकों से उम्मीद करता हूँ कि वे इस पत्रिका की हर रचना को उत्साहपूर्वक पढ़ेंगे और हमें अपने अमूल्य विचारों से अवगत कराएंगे।

मेरी कामना है कि भविष्य में भी यह पत्रिका और अधिक समृद्धिशाली होगी और इसके निरंतर प्रकाशन से इस कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा।

जय हिन्द ।

वि भुजेल

(विनोद भुजेल)

उप महालेखाकार

(ए.एम.जी.-II)



सत्यमेव जयते

संदेश



वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका “कामरूप” के तृतीय अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। हिंदीतर क्षेत्र से प्रकाशित यह पत्रिका, अंक दर अंक गुणात्मकता तथा रचनात्मकता के नए स्तंभ स्थापित करती जा रही है।

मेरी शुभकामना है कि “कामरूप” इसी प्रकार अपनी यात्रा सतत् जारी रखेगी और सफलता के नए-नए लक्ष्य प्राप्त करती हुई आगे बढ़ेगी।

जय हिन्द ।

सुजीत कुमार दास
(सुजीत कुमार दास)

उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III)



सत्यमेव जयते

संदेश



मुझे प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका “कामरूप” का तृतीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है। यह हमारे लिए बहुत ही गौरव की बात है।

इस शुभ अवसर पर मैं “कामरूप” परिवार के सभी रचनाकारों, पाठकों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

जय हिन्द ।

बाप्पादित्य

(बाप्पादित्य मजूमदार)

उप महालेखाकार

(ए.एम.जी.-IV एवं एल.जी.ए)

‘कामरूप’ पत्रिका का तृतीय अंक आपको समर्पित करते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है।

भारत अनेक भाषाओं की भूमि है। भाषा जनगणना आंकड़ा-2011 के अनुसार भारत में 22 अनुसूचित भाषाएँ एवं 99 + गैर-अनुसूचित भाषाएँ हैं। संविधान के अनुसार हिन्दी भारत की राजभाषा है। आधिकारिक कार्यों के लिए अंग्रेजी के उपयोग को हिन्दी के साथ-साथ जारी रखने की स्वीकृति भी दी गई है। भारत सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने “12 प्र” की रूपरेखा की संरचना की है, जो इस प्रकार है: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रमोशन, प्रतिबद्धता एवं प्रयास। इन “12 प्र” को ध्यान में रख कर कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी को प्रभावी रूप से कार्यान्वित करने का प्रयास करना है। इसका अनुसरण करते हुए, कार्यालय के हिन्दी एवं अहिन्दी भाषी कर्मिकों की रचनाओं को गृह पत्रिका ‘कामरूप’ में प्रकाशित कर उन्हें प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया है।

यह पत्रिका न केवल इस कार्यालय में कार्यरत कर्मिकों में, अपितु समस्त केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों के कर्मिकों में हिन्दी के प्रति रुचि जगाने के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक क्षमता एवं प्रतिभा को अभिव्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। पत्रिका परिवार सभी रचनाकारों के प्रति सहृदय आभार प्रकट करता है। आदरणीय पाठकों से निवेदन है कि वे पत्रिका को पढ़ें एवं अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएँ जिससे हमें इस पत्रिका को अधिक से अधिक मनोरंजक और ज्ञानवर्धक बनाने में प्रेरणा एवं मार्गदर्शन मिले।

अंत में सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल के समस्त सदस्यों को ‘कामरूप’ के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

सम्पादक



अनुक्रमणिका



◆ पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विरासत	श्री नीतीश दुबे	1
◆ सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की जटिलताएँ	श्रीमती पुरबी बोरा	3
◆ ऑडिट सप्ताह 2023-समारोह के दौरान स्थानीय निकाय संबंधी कार्यक्रमों पर विवरण		4
◆ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और हमारा भविष्य	श्री गौरव कुमार	7
◆ महापुरुष शंकरदेव: असम के संत और समाज सुधारक	श्री अंकित सेवा	11
◆ शाम की चाय	श्री आशीष रंजन	12
◆ गुवाहाटी स्मार्ट सिटी मिशन से आकांक्षाएँ और इसकी चुनौतियाँ	श्री जयंत घोष	14
◆ सोशल मीडिया और इन्फ्लुएंसर्स	श्री दीपक जोशी	18
◆ प्रभु जगन्नाथ	श्रीमती अंजलि कुमारी	21
◆ बनारस में एक दिन	श्री अभिनव कुमार चौधरी	23
◆ सफर	श्रीमती पूजा रानी	26
◆ दहेज	श्रीमती पूजा रानी	26
◆ गुवाहाटी शहर का आधिकारिक पशु -शिसु	सुश्री जयती घोष	27
◆ स्कैम और हम	श्री अश्वनी कुमार	29
◆ कुंभ मेला: आस्था, संस्कृति और आधुनिक परिप्रेक्ष्य	श्री गिरिजेश पाण्डेय	31
◆ पर्यटन के क्षेत्र में संभावनाएँ	श्री अभिनव कुमार	36
◆ बेटी बोझ नहीं	श्रीमती नीतू कुमारी	38
◆ अभिलाषा	श्री उत्कर्ष भटनागर	40
◆ राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	श्री सत्यम कुमार	41
◆ अद्भुत असम	श्री अभिनव कुमार चौधरी	43
◆ यशोधरा: त्याग की प्रतिमूर्ति	श्री मनीष भास्कर	44
◆ दीद	श्री सुब्रत विश्वास	46
◆ ओल	श्री सत्येन्द्र पाण्डेय	47
◆ मृत्यु के बाद क्या ?	श्री सरोज शेखर	48

पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विरासत



श्री नीतीश दुबे

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत, जिसे हम आध्यात्मिक चक्षुओं से 'भारत माता' का दर्जा देते हैं, पूर्वोत्तर भारत उसका एक अभिन्न अंग है। पूर्वोत्तर भारत की भूमि अत्यंत सुंदर, हरित और विशेषताओं से भरी हुई है। यहाँ जो जन औषधि, जीव-जन्तु, नाना प्रकार के अन्य पक्षी और अनेक जीव पाए जाते हैं, उनका अनुमान लगाना कठिन है। यहाँ की सुंदरता पर्यटकों को अत्यंत आकर्षित करती है। असम, मेघालय, मणिपुर, अरुणाचल, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैंड और सिक्किम, यह आठ राज्य मुख्य तौर पर पूर्वोत्तर भारत का राजनैतिक हिस्सा हैं। हर राज्य की अपनी अलग ही विशेषताएँ हैं।



अगर असम की बात की जाए तो यह प्राचीन समय से कामरूप के नाम से जाना जाता था। माँ कामाख्या का शक्तिपीठ यहाँ स्थित है। यह प्रदेश, तंत्र एवं वैदिक साधना के लिए अत्यधिक प्रचलित है। श्री श्रीमंत शंकरदेव ने भक्ति काल में (15-16 वीं शताब्दी) में यहाँ वैष्णव धर्म का प्रचार

एवं प्रसार किया। तब से असम की सांस्कृतिक विरासत में वैष्णव समुदायों की अहम भूमिका हो गई है। यहाँ का भोजन, वस्त्र, 'बिहु' नृत्य अत्यधिक प्रचलित हैं। इस राज्य के लोग अपने अतिथियों का स्वागत सत्कार बहुत अच्छे ढंग से करते हैं।

असम के पड़ोस में, मेघालय स्थित है। इसको 'स्कॉटलैंड ऑफ द ईस्ट' भी कहा जाता है। इस प्रदेश में प्राकृतिक खूबसूरती बहुत है। अनेक प्रकार की गुफाएँ, झरना, नदियाँ, पहाड़ आदि इस प्रदेश की सुंदरता में बढ़ोतरी करते हैं। यहाँ की जनजाति (खासी) भी बहुत विकसित जाति है।

अरुणाचल भारत का पूर्वोत्तर राज्य है। इसकी सीमा चीन से सटी हुई है। यहाँ पर भी प्राकृतिक सुंदरता बहुत है। त्रिपुरा पूर्वोत्तर भारत के सबसे शिक्षित राज्यों में से एक है। यहाँ के लोग बहुत ही अतिथिप्रिय और सम्मान देने वाले होते हैं।





मिजोरम, नागालैंड और मणिपुर पूर्वोत्तर भारत के अन्य राज्य हैं। यहाँ पर भी प्राकृतिक सुंदरता बहुत है। परंतु यहाँ पर कभी-कभी जनजातियों में आपस में टकराव होते रहते हैं। हालाँकि यह लंबा नहीं चलता और यहाँ पर भी लोग अपने अतिथियों का बहुत सत्कार करते हैं।

सिक्किम राज्य, पश्चिम बंगाल के उत्तर में स्थित है। यह पूरा हिमाद्री पर बसा हुआ है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता अभूतपूर्व है। परंतु यहाँ भी प्राकृतिक आपदाएँ जैसे भूकंप इत्यादि भी समय-समय पर आते रहते हैं। यहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार और प्रसार बहुत अधिक है।

तो हम देख सकते हैं कि पूर्वोत्तर भारत, भारत का सबसे सुंदर और अभिन्न हिस्सा है। यहाँ हिन्दू, बौद्ध धर्म मुख्य है तथा मिजोरम, नागालैंड के अधिकांश हिस्सों में इसाई धर्म के लोग भी बसे हुए हैं। यहाँ हर राज्य का अपना ही एक सांस्कृतिक नृत्य है, जैसे असम का लोक नृत्य सत्रिया और बिहु नृत्य प्रसिद्ध है। हर राज्य का भोजन, वस्त्र, सांस्कृतिक कलाएँ विशेष हैं। भारत सरकार इन राज्यों की सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करने के लिए अनेक कदम भी उठा रही है। हमें इन राज्यों की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ाने के साथ-साथ, यहाँ नवीतम साधन और नाना प्रकार की आधुनिक प्रौद्योगिकी भी लानी होगी, जिसकी शुरुआत हो चुकी है। वह दिन अब दूर नहीं जब पूर्वोत्तर भारत अपनी सांस्कृतिक

विरासत को संभालते हुए भारत के विकसित राज्यों में गिना जाएगा।

यहाँ की सांस्कृतिक विरासत अपने में ही अभूतपूर्व है। यहाँ के लोग स्वभाव से ही बहुत मिलनसार और अतिथिप्रिय होते हैं। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत पूरे विश्व को शिक्षा और ज्ञान देने की क्षमता रखती है।

आज भारत एक बहुत ही ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है। हम यहाँ से कैसे आगे बढ़ते हैं वह हमारे परिश्रम, धर्म-युक्त कार्य और हमारे आध्यात्मिक बल पर निर्भर करता है। इसमें पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विरासत एक अहम भूमिका निभाने की क्षमता रखती है। हमें बहुत ध्यान से और धर्म-युक्त कार्य करके ही आगे बढ़ना होगा और इसके लिए सांस्कृतिक विरासत की रक्षा और उसकी दिशा में ही आगे बढ़ना होगा। वह दिन दूर नहीं जब भारत एक विकसित देश होगा, लेकिन इसकी विशेषता यह होगी कि हमने अपने विकास की प्रक्रिया में अपनी सांस्कृतिक विरासत को एक विशेष स्थान दिया है, जिसमें पूर्वोत्तर की सांस्कृतिक विरासत भी एक अहम भूमिका निभाएगी, और 'विश्वगुरु' होने का भारत का लक्ष्य अवश्य ही पूरा होगा। □

सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की जटिलताएँ



श्रीमती पुरबी बोरा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रस्तावना: भारत देश बहुत ही विशाल और विस्तृत है जो पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक विभिन्न राज्यों में बँटा हुआ है। जैसे कि एक कहावत है – **कोस कोस पर पानी बदले, चार कोस पर भाषा**, उसी प्रकार भारत में हर राज्य और यहाँ तक कि जाति-समुदाय के आधार पर रीति-रिवाज और भाषाएँ अलग-अलग होती है। हर राज्य के काम-काज की भाषा भी इसी तरह भिन्न होती है। इसी अनेकता को दूर करने के लिए भारत में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकारा गया था, और साथ-साथ हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए समय-समय पर कार्यालयों में भिन्न कार्यशालाएँ आदि आयोजित की जाती हैं और साथ ही इसके प्रोत्साहन के लिए भिन्न कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है।

जटिलताएँ : हिन्दी के कार्यान्वयन को वैसे तो काफी महत्व दिया जाता है, फिर भी विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। हिंदी भाषी प्रदेशों को छोड़कर, जो हिंदीतर भाषी राज्य हैं, उनमें प्रारम्भिक स्तर से ही हिन्दी को पाठ्यक्रम में शामिल नहीं किया जाता है। उसके ऊपर से इन जगहों में भाव आदान-प्रदान करने की भाषा भी हिन्दी नहीं होती है जिससे भाषा को सीखने में कठिनाइयाँ होती हैं और कार्यालयों में जब हिन्दी भाषा का प्रयोग करना पड़ता है तो कर्मचारियों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। साथ ही जो भाषा कथित रूप से व्यवहार में होती है उसे कार्यालयीन भाषा की तरह व्यवहार करने में सीमितता होती है क्योंकि कथित और लिखित और साथ ही कार्यालय में प्रयोग की जाने वाली भाषा

में अंतर होता है। इसके उपरान्त जैसा कि आजकल ज्यादातर कार्य कम्प्यूटर पर होने लगे हैं तो यह दिक्कत दोगुनी हो गई है क्योंकि अधिकतर लोगों को हिन्दी में टाइप करना नहीं आता है। वैसे तो आजकल बहुत सारे ऐप हैं जिन्होंने हिन्दी भाषा के प्रयोग को काफी आसान बना दिया है लेकिन जो पुराने कर्मचारी हैं उनका कम्प्यूटर ज्ञान भी तुलनात्मक रूप से कम है।

समाधान: उपरोक्त मुश्किलों के समाधान के लिए कुछ कदम उठाए जा सकते हैं। जैसे कि बुनियादी स्तर से ही पाठ्यक्रमों में हिन्दी को गुरुत्व दिया जा सकता है, विद्यालयों और कार्यालयों में समय-समय पर कार्यशालाएँ और पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जा सकती है, प्रोत्साहन के लिए हिन्दी पखवाड़ा, जो कि आयोजित किया जाता है, के साथ-साथ नियमित अंतराल में और भी प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित की जा सकती हैं। हालाँकि भिन्न पाठ्यक्रमों के प्रावधान हैं, जैसे – प्राज्ञ, पारंगत इत्यादि, लेकिन ऐसी व्यवस्था भी की जा सकती है कि कर्मचारियों के लिए समय-समय पर और भी कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ ताकि वे पढ़ी हुई चीजों को न भूलें। इसके साथ ही टाइपिंग के कोर्स को भी बाध्यतामूलक कर सकते हैं।

अन्ततः अनेकता में एकता लाने के लिए भाषा से बड़ा और कोई माध्यम नहीं होता, इसीलिए हिन्दी भाषा का प्रचार और प्रसार करना चाहिए और जैसे कि कहा जाता है – **जहाँ चाह वहाँ राह**, इसी उम्मीद के साथ हमें आगे बढ़ना होगा। □

ऑडिट सप्ताह 2023 – समारोह के दौरान स्थानीय निकाय संबंधी कार्यक्रमों पर विवरण

इस कार्यालय में दिनांक 20 नवम्बर से 24 नवम्बर, 2023 तक ऑडिट सप्ताह मनाया गया जिसमें स्थानीय निकाय संबंधी निम्नलिखित कार्यक्रम किए गए:-

1. पंचायती राज संस्थानों के निर्वाचित प्रतिनिधियों को सम्मानित करना:

दिनांक 20 नवम्बर, 2023 को नगांव जिला परिषद कार्यालय में एक आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नगांव जिले से स्थानीय शासन (पी.आर.आई.) के चौदह प्रतिष्ठित निर्वाचित प्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में निदेशक, प्रारंभिक लेखापरीक्षा संस्थान (पी.ए.आई.), असम और सामाजिक लेखापरीक्षा ईकाई, असम विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस अभिनंदन समारोह के माध्यम से निर्वाचित प्रतिनिधियों को स्थानीय स्वशासन तंत्र के रूप में कार्य करते समय आने वाली चुनौतियों पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान किया गया। अन्य बातों के साथ-साथ कुछ मुख्य बाधकताएँ जैसे, 29 विषयों का स्थानीय शासन को हस्तांतरण न करना, सूत्र विभागों से सहयोग एवं सहायता की कमी के कारण विभिन्न सामाजिक योजनाओं में आने वाली बाधाओं पर चर्चा हुई। प्रतिनिधियों ने स्थानीय शासन की कार्यपद्धति को प्रभावी बनाने के लिए न केवल निधि के अंतरण अपितु कार्यों एवं पदाधिकारियों को हस्तांतरित करने पर बल दिया।

यह आउटरीच कार्यक्रम लेखापरीक्षा की भूमिका, जैसे "Aid to the management / those who are charged with Governance" पर चर्चा करने के लिए एक मंच के तौर पर भी सफल रहा। स्थानीय निकायों पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की लेखापरीक्षा रिपोर्ट में स्थानीय शासन को निधि, कार्यों और प्राधिकारियों के अंतरण और जिला योजना समिति (डीपीसी) एवं ग्राम पंचायत विकास योजना (जीपीडीपी) जैसी समितियों के गठन की सिफारिशों पर विशेष रूप से चर्चा की गई।

उप निदेशक, पीएआई (असम) और निदेशक, सामाजिक लेखापरीक्षा इकाई, असम द्वारा स्थानीय निकाय के लिए आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किए जाने, और सुशासन के लिए एक प्रभावी मशीनरी के रूप में स्थानीय शासन को स्थापित करने हेतु विभिन्न चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए सीएजी की पहल की सराहना की गई।

2. यूएलबी पर कार्यशाला का आयोजन :

कार्यालय में दिनांक 22 नवम्बर 2023 को "Status of Implementation of 74th Constitutional Amendment in Assam" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में रंगिया नगरपालिका बोर्ड एवं गुवाहाटी नगर निगम के निर्वाचित प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में, शहरी स्थानीय निकायों (यू.एल.बी.) की समग्र कार्यप्रणाली और उसकी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, "Efficacy of Implementation of 74th Constitutional Amendment Act in Assam" पर निष्पादन लेखापरीक्षा रिपोर्ट पर चर्चा की गई।

असम में शहरीकरण, विभिन्न अर्ध-सरकारी संगठनों की भागीदारी, यू.एल.बी में पर्याप्त कर्मचारियों की तैनाती और उपयुक्त कौशल वाले कर्मियों की कमी के संबंध में राज्य वित्त आयोग की सिफारिशों पर राज्य सरकार की प्रतिक्रिया, जैसे मुद्दों

पर चर्चा की गई। एक जीवंत लोकतंत्र के लिए स्थानीय शासन को शक्तियों और कार्यों के हस्तांतरण किए जाने के महत्व पर प्रकाश डाला गया। कार्यशाला में स्थानीय शासन के निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए क्षमता निर्माण किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया ताकि वे अपने समक्ष आने वाले मुद्दों की व्यापक समझ हासिल कर सकें। प्रतिभागियों ने स्थानीय आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए कामकाजी यू.एल.बी. के कार्यों में सुधार की आशा करते हुए ज्ञान और अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए उपलब्ध कराए गए मंच के लिए आभार व्यक्त किया।

संक्षेप में, ऑडिट सप्ताह समारोह के दौरान पी.आर.आई. के निर्वाचित प्रतिनिधियों का अभिनंदन कार्यक्रम और यू.एल.बी. पर आयोजित कार्यशाला, जिसका उद्देश्य संवाद, मान्यता और विचारों और अनुभवों के पारस्परिक आदान-प्रदान के माध्यम से स्थानीय सरकार की प्रभावशीलता को बढ़ाना था, वह उपयोगी पाई गई।



पूर्व क्षेत्र और अंतर क्षेत्रीय कैरम टूर्नामेंट 2023-24 की झलकियाँ



कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और हमारा भविष्य



श्री गौरव कुमार
लेखापरीक्षक

आज हमें यह देखकर आश्चर्य नहीं होता कि हमारे घर में कोई उपकरण केवल ध्वनि आदेश पर हमारे लिए कुछ कर रहा है या हमारा एयर कंडीशनर बाहरी जलवायु परिस्थितियों के अनुसार तापमान को स्वचालित रूप से समायोजित करता है या जब हम किसी मॉल या दुकान के दरवाजे के सामने आते हैं तो दरवाजा अपने आप खुल जाता है। किसने कल्पना की थी कि किसी दिन रोबोट इंसानों की तरह रेस्तरां में खाना परोसेंगे। स्वचालित कारों और हवाई जहाजों में ऑटोपायलट मोड होता है जो उन्हें स्वचालित रूप से चलाता है। यदि सड़क पर निर्धारित गति सीमा से अधिक तेज गति से गाड़ी चलाते हैं तो स्थापित एआई सिस्टम न केवल आपके वाहन की वास्तविक गति को मापता है बल्कि वाहन नंबर को पहचानकर और उसके मालिक के विवरण को ट्रैक करके वाहन के साथ पंजीकृत मालिक के मोबाइल नंबर पर जुर्माना रिपोर्ट भी भेजता है।

यह सब कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में धीरे-धीरे हो रही प्रगति के कारण संभव हुआ है।

कई देश अपने दुश्मनों के खिलाफ अधिक कुशलता से और जीवन की हानि के बिना लड़ने के लिए ह्यूमनॉइड रोबोट पेश करने की योजना बना रहे हैं। ये रोबोट खुद ही पता लगा सकते हैं कि वर्तमान स्थिति के आधार पर उन्हें कौन सा सबसे अच्छा निर्णय लेना चाहिए और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए। यह आने वाले दिनों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या पेशकश कर सकती है इसकी एक झलक मात्र है।

हालाँकि सभी संभावित क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करना बहुत दिलचस्प और कुशल लगता है लेकिन यह उसी स्तर पर डरावना और खतरनाक भी है।

चैट जीपीटी के अनुसार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एक ऐसी तकनीक है जिसमें कंप्यूटर या मशीनों को इस प्रकार से प्रोग्राम किया जाता है कि वे मानवों की तरह सोचने, निर्णय लेने और समस्याओं को हल करने में सक्षम हो सकें। इस तकनीक के तहत, मशीनें बड़े पैमाने पर डेटा का विश्लेषण करती हैं, पैटर्न को पहचानती हैं, और पिछले अनुभवों से सीखकर अपने कार्यों को स्वचालित रूप से पूरा कर सकती हैं। इसका उद्देश्य उन कार्यों को मशीनों द्वारा पूरा करना है, जिनके लिए आमतौर पर मानव बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती है, जैसे भाषा की समझ, चित्रों की पहचान, निर्णय लेना, और संवाद करना। एक तरह से हम कह सकते हैं कि हम विभिन्न परिस्थितियों में मनुष्य कैसे सोचता है और निर्णय लेता है, उसकी प्रतिकृति बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के विकास में इसकी उत्पत्ति के बाद से उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आइए एआई प्रौद्योगिकी के विकास के कालक्रम पर एक नज़र डालें:-

संकल्पना की नींव:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणा प्राचीन मिथकों और कहानियों से शुरू होती है, लेकिन इसकी वैज्ञानिक नींव 1940 और 1950 के दशक में रखी गई थी।

ब्रिटिश गणितज्ञ एलन ट्यूरिंग ने एक ऐसी मशीन का विचार प्रस्तुत किया जो किसी भी मानव बुद्धि का अनुकरण कर सकती है। 1950 के अपने अभूतपूर्व कार्य, “कंप्यूटिंग मशीनरी एंड इंटेलिजेंस” में, उन्होंने ट्यूरिंग टेस्ट को बुद्धिमत्ता के मानदंड के रूप में पेश किया।

1950 के दशक में, जॉन मैकार्थी द्वारा “कृत्रिम बुद्धिमत्ता” शब्द गढ़ा गया, जिन्होंने 1956 में प्रसिद्ध डार्टमाउथ सम्मेलन का आयोजन किया, जिसे (AI) के क्षेत्र का जन्म माना जाता है। प्रारंभिक एआई अनुसंधान प्रतीकात्मक एआई या “अच्छे पुराने जमाने के एआई” (जीओएफएआई) पर केंद्रित था, जो उच्च-स्तरीय समस्याओं और तर्कों के प्रतीकात्मक (मानव-पठनीय) प्रतिनिधित्व का उपयोग करता था। लॉजिक थियोरिस्ट और जनरल प्रॉब्लम सॉल्वर जैसे कार्यक्रमों ने दिखाया कि मशीनें उन कार्यों को हल कर सकती हैं जिनके लिए मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है।

प्रारंभिक आशावाद के बाद संदेह का दौर आया। कई समस्याएं अपेक्षा से अधिक कठिन हो गईं, जिससे “एआई विंटर” की अवधि शुरू हो गई, जिसमें एआई में फंडिंग और रुचि में गिरावट आई।

1980 के दशक में, विशेषज्ञ प्रणालियाँ उभरीं जो मानव विशेषज्ञ निर्णयों का अनुकरण करने के लिए यदि-तब (If-Then) नियमों का उपयोग करती थीं। ये प्रणालियाँ व्यावसायिक रूप से सफल रहीं, लेकिन अंततः स्केलेबिलिटी और अनुकूलनशीलता की सीमाओं से ग्रस्त रहीं।

मशीन लर्निंग:

समय के साथ एआई अनुसंधान धीरे-धीरे मशीन लर्निंग में स्थानांतरित हो गया, जहाँ एल्गोरिदम को स्पष्ट प्रोग्रामिंग के बिना भविष्यवाणियाँ या निर्णय लेने के लिए डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है। तंत्रिका नेटवर्क, जेनेटिक एल्गोरिदम और सपोर्ट वेक्टर मशीन जैसी तकनीकें लोकप्रिय हो गईं।

बिग डेटा:

डिजिटल डेटा के विस्फोट और कंप्यूटिंग शक्ति में प्रगति के कारण 2010 के दशक में एआई का पुनरुत्थान हुआ है। एआई सिस्टम अब भारी मात्रा में डेटा संसाधित कर सकता है और उससे सीख सकता है।

डीप लर्निंग:

डीप लर्निंग मशीन लर्निंग का एक उपक्षेत्र है जो मल्टीलेयर न्यूरल नेटवर्क (डीप न्यूरल नेटवर्क) का उपयोग करके डेटा में जटिल पैटर्न को मॉडल करता है। इससे छवि और वाक् पहचान, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और स्वायत्त प्रणालियों में अभूतपूर्व सफलताएँ मिली हैं।

महत्वपूर्ण कार्य में टेन्सरफ्लो और पायटोरच जैसे गहन शिक्षण ढांचे के साथ-साथ अल्फागो जैसे सिस्टम का विकास शामिल है, जो गेम में मानव चैंपियन को हराते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का उपयोग अब स्वास्थ्य सेवा, वित्त, परिवहन और मनोरंजन सहित विभिन्न उद्योगों में किया जाता है। अनुप्रयोगों में वैयक्तिकृत अनुशंसाओं और उन्नत चिकित्सा निदान से लेकर स्व-चालित कारों तक शामिल हैं।

हालाँकि हमें अभी भी एआई के विकास के शिखर को देखना बाकी है, फिर भी इसने मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण रूप से प्रवेश किया है।

सकारात्मक प्रभाव:

1. स्वास्थ्य देखभाल:

निदान और उपचार: एआई एल्गोरिदम चिकित्सा डेटा का विश्लेषण करके और व्यक्तिगत उपचार योजनाएँ बनाकर निदान की सटीकता में सुधार कर सकता है।

दवा की खोज: एआई दवा की खोज प्रक्रिया को तेज करता है और नई दवाओं को बाजार में लाने का समय और लागत कम करता है।

टेलीमेडिसिन: एआई-संचालित प्लेटफॉर्म दूरस्थ रूप से स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कर सकते हैं, जिससे वंचित आबादी

के लिए चिकित्सा देखभाल सुलभ हो जाएगी।

2. पर्यावरणीय स्थिरता:

जलवायु मॉडलिंग: एआई जलवायु मॉडल में सुधार कर सकता है, परिवर्तनों के बारे में अधिक सटीक भविष्यवाणी कर सकता है और जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए रणनीति विकसित करने में मदद कर सकता है।

सुरक्षात्मक उपाय: एआई उन्नत डेटा विश्लेषण और पैटर्न पहचान के माध्यम से लुप्तप्राय प्रजातियों की निगरानी और संरक्षण में भी मदद कर सकता है।

संसाधन प्रबंधन: एआई पानी, ऊर्जा और कच्चे माल जैसे संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करता है, अपशिष्ट को कम करता है और दक्षता में सुधार करता है।

3. आर्थिक विकास:

उत्पादकता: स्वचालन और एआई-समर्थित प्रक्रियाएँ विभिन्न उद्योगों में उत्पादकता बढ़ा सकती हैं। इससे उत्पादों की उच्चतम गुणवत्ता बनाए रखने में भी मदद मिलती है।

नवप्रवर्तन: एआई नई प्रौद्योगिकियों और व्यापार मॉडल को सक्षम करके नवाचार को बढ़ावा देता है।

नौकरी सृजन: जबकि एआई कुछ नौकरियों को विस्थापित कर सकता है, यह एआई विकास, रखरखाव और संबंधित क्षेत्रों में नए अवसर भी पैदा करता है। मुझे लगता है कि यह आगामी नवाचार का एक हिस्सा है और समय के साथ हमेशा बदलता रहेगा। हम मनुष्यों को हमेशा नवीनतम नवाचारों को अपनाने और उनके साथ तालमेल बनाए रखने के लिए तैयार रहना चाहिए।

4. शिक्षा:

वैयक्तिकृत शिक्षण: एआई शैक्षिक सामग्री को व्यक्तिगत शिक्षण शैलियों और आवश्यकताओं के अनुरूप बनाता है, जिससे परिणामों में सुधार होता है।

पहुँच: एआई-संचालित उपकरण दूर-दराज या वंचित

क्षेत्रों में लोगों को गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संसाधन प्रदान कर सकते हैं।

चुनौतियाँ और जोखिम:

नौकरी में विस्थापन:

स्वचालन: एआई और स्वचालन विनिर्माण, ग्राहक सेवा और डेटा प्रविष्टि नौकरियों को विस्थापित कर सकता है।

पुनर्प्रशिक्षण: एआई प्रौद्योगिकियों द्वारा बनाई गई नई भूमिकाओं को भरने के लिए श्रमिकों को फिर से प्रशिक्षित करने और कौशल बढ़ाने की आवश्यकता है।

गोपनीयता और सुरक्षा:

डेटा सुरक्षा: एआई का व्यापक उपयोग व्यापक डेटा संग्रह से जुड़ा है, जो डेटा सुरक्षा और डेटा सुरक्षा के बारे में चिंता पैदा करता है।

साइबर सुरक्षा: इसका उपयोग कैसे किया जाता है इसके आधार पर, एआई साइबर सुरक्षा को सुधार भी सकता है और कमजोर भी कर सकता है।

नैतिकता और विनियमन:

एआई की तीव्र प्रगति ने नैतिक और नियामक चिंताओं को बढ़ा दिया है। डेटा गोपनीयता, एल्गोरिदम पूर्वाग्रह और रोजगार पर एआई का प्रभाव जैसे मुद्दे चर्चा के महत्वपूर्ण बिंदु बनते जा रहे हैं।

पूर्वाग्रह: यदि ठीक से नहीं संभाला गया, तो एआई सिस्टम मौजूदा पूर्वाग्रहों को बनाए रख सकता है और यहां तक कि उन्हें सुदृढ़ भी कर सकता है।

निर्णय लेना: आपराधिक न्याय या रोजगार जैसे क्षेत्रों में लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णय लेने के लिए एआई के उपयोग को लेकर नैतिक प्रश्न उठते हैं।

नियंत्रण और निर्भरता:

स्वायत्तता: एआई सिस्टम की बढ़ती स्वायत्तता नियंत्रण और निगरानी के बारे में चिंताएँ बढ़ाती है।

व्युत्पत्ति: यदि एआई सिस्टम किसी भी संयोग से

विफल हो जाता है या उसमें खराबी आ जाती है, तो यह भारी रणनीतिक क्षति का कारण बन सकता है।

दीर्घकालिक विचार और भविष्य की दिशा:

सामान्य एआई और उससे आगे: वर्तमान एआई सिस्टम, जिसे नैरो एआई के रूप में जाना जाता है, विशिष्ट कार्यों में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं, जबकि सामान्य एआई प्राप्त करना जो एक मानव द्वारा किए जा सकने वाले सभी बौद्धिक कार्यों को कर सकता है, एक दीर्घकालिक लक्ष्य बना हुआ है।

सुदृढ़ीकरण सीखने, स्थानांतरण सीखने और समझाने योग्य एआई जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान लगातार एआई क्षमताओं की सीमाओं को आगे बढ़ा रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास एक गतिशील और सतत प्रक्रिया है, जिसमें प्रत्येक चरण पिछली प्रगति पर आधारित है और अधिक परिष्कृत और शक्तिशाली सिस्टम बनाता है।

सुपरइंटेलिजेंस: मानव बुद्धि से बेहतर एआई का विकास अभूतपूर्व चुनौतियों और अवसरों को जन्म दे सकता है जिन पर सावधानीपूर्वक विचार और शासन की आवश्यकता है। सुपरइंटेलिजेंस उस बुद्धिमत्ता को संदर्भित करता है जो उन सभी क्षेत्रों में सबसे बुद्धिमान मानव मस्तिष्क की संज्ञानात्मक क्षमताओं से कहीं अधिक है जहां एआई सिस्टम वैज्ञानिक रचनात्मकता, सामान्य ज्ञान और सामाजिक कौशल सहित उच्च स्तर की बुद्धि प्राप्त कर सकता है। हालाँकि अभी तक सच्ची अधीक्षणता हासिल नहीं की जा सकी है,

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में तेजी से प्रगति ने इसके संभावित विकास के बारे में रुचि और चिंता को बढ़ा दिया है। शोधकर्ता और नीतिशास्त्री यह सुनिश्चित करने के तरीकों की तलाश में रहते हैं कि एआई का भविष्य मानवता के लिए उपयोगी बना रहे।

वैश्विक सहयोग: एआई के वैश्विक प्रभाव को संबोधित करने के लिए मानक निर्धारित करने, सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने और जोखिमों को कम करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

आने वाले दिनों में अगर हम संभावित खतरों से मुक्त होकर सकारात्मक तरीके से एआई तकनीक का उपयोग करने में सक्षम हो जाते हैं तो मुझे लगता है कि यह मानवता को बहुत सकारात्मक तरीके से मदद कर सकता है और हमारे समाज को और भी बेहतर बना सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मानवता के भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ेगा, जिससे महत्वपूर्ण लाभ होंगे लेकिन साथ ही गंभीर चुनौतियाँ भी आएँगी। एआई के सकारात्मक योगदान को सुनिश्चित करने के लिए नवाचार और नैतिक विचारों, गोपनीयता संबंधी चिंताओं और नए कौशल आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण होगा। □

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है।

—जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

— डॉ. राजेंद्र प्रसाद

महापुरुष शंकरदेव: असम के संत और समाज सुधारक



श्री अंकित सेवा
लेखापरीक्षक



शंकरदेव का जन्म 26 सितंबर 1449 को असम के नगाँव जिले के आलिपुखुरी नामक गाँव में हुआ था। शंकरदेव असम के एक महान संत, कवि, और समाज सुधारक थे। उन्होंने असम में भक्ति आंदोलन की शुरुआत की और लोगों को

भगवान विष्णु की भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

शंकरदेव का जीवन बहुत सरल और भक्ति से भरा हुआ था। वे समाज में फैली बुराइयों जैसे जात-पात, भेदभाव, और अंधविश्वास के खिलाफ थे। उन्होंने सभी को एकता, प्रेम, और समानता का संदेश दिया। शंकरदेव ने कई भजन, कीर्तन, और नाटक लिखे, जो असमिया संस्कृति में आज भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने “सत्र” नामक धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना की, जहाँ लोग भक्ति और शिक्षा प्राप्त करते थे।

शंकरदेव के नाम पर असम में कई स्थानों और संस्थाओं का नाम रखा गया है। जैसे “शंकरदेव कलाक्षेत्र” जो

गुवाहाटी के पांजाबारी क्षेत्र में स्थित है, यहाँ असम की संस्कृति और कला को प्रदर्शित किया गया है।

इसके अलावा एक प्रमुख संस्था “श्रीमंत शंकरदेव यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंस” है। यह विश्वविद्यालय असम में चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्रदान करता है। गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल (जी.एम.सी.एच) भी इसी विश्वविद्यालय से जुड़ा हुआ है, जो असम का एक प्रमुख मेडिकल कॉलेज और अस्पताल है।

शंकरदेव के सबसे प्रिय शिष्य माधवदेव थे, जिन्होंने शंकरदेव की शिक्षाओं को आगे बढ़ाया। माधवदेव ने भी असम में वैष्णव धर्म को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

असम में हर साल 26 सितंबर को शंकरदेव का जन्मदिन मनाया जाता है। इस दिन लोग उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं को याद करते हैं और भजन-कीर्तन करते हैं। कई स्थानों पर धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

शंकरदेव की शिक्षाएँ आज भी हमें एकता, प्रेम, और भक्ति का मार्ग दिखाती हैं।

उनका योगदान असम और पूरे भारत में याद किया जाएगा। □

शाम की चाय



श्री आशीष रंजन

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



दोपहर का समय था। श्रीमान श्री अपने कार्यालय के कक्ष में अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त थे, तभी उनकी नजर उनके कमरे के बाहर लगे पेड़ों पर गई। पत्ते काफी तेजी से हिल रहे थे। यह दृश्य देख कर उन्होंने अपने कार्य को रोक कर खिड़की का पल्ला खोला एवं पेड़-पौधों के साथ प्राकृतिक हवा का आनंद उठाने लगे। आज के समय में जब सब कृत्रिम हो गया हो तो कुछ प्राकृतिक देख कर अतुलनीय आनंद मिलता है। कुछ ही देर में तेज बारिश भी शुरू हो गई। इसके साथ श्रीमान श्री काफी प्रसन्न हो गए एवं अपने काम को भूलकर संध्या की चाय के बारे में सोचने लगे। बारिश काफी तीव्र गति से हो रही थी। दिन के समय बारिश को देखने का भी अपना एक अलग ही मजा है। इस आनंद को महसूस करते हुए

श्रीमान श्री अपने कार्यों को तीव्र गति से करने लगे ताकि कार्यालय का समय खत्म होते ही वे अपने घर की तरफ निकल सकें एवं घर में शाम की चाय का आनंद आराम से उठा सकें।

अपने कार्यों को समाप्त करने के बाद जब श्रीमान श्री ने अपनी कुर्सी के सामने लगी घड़ी को देखा तो पाया कार्यालय का समय भी समाप्त होने वाला है।

श्रीमान श्री घर जाने को तैयार हुए और जैसे ही वे अपने कार्यालय भवन से बाहर निकले, उन्हें एहसास हुआ कि आज काफी बारिश हो चुकी है क्योंकि आज पहली बार कार्यालय भवन के पास बारिश का पानी जमा था। लेकिन श्रीमान श्री अपनी चाय के बारे में सोच कर कार्यालय भवन को छोड़ कर जल्दी से मुख्य मार्ग तक पहुँचे ताकि जल्दी से बस पकड़ कर घर पहुँच जाएँ।

मुख्य मार्ग तक पहुँच कर श्रीमान श्री को एहसास हुआ कि आज रास्ते में कुछ ज्यादा ही भीड़भाड़ है एवं इसकी परवाह किए बिना वे अपने मार्ग की एक बस पर सवार हो गए। काफी दिनों की गर्मी के बाद आज का मौसम काफी

सुहावना था एवं हल्की हवा भी चल रही थी, तो श्रीमान श्री अपने सीट पर सो गए। कुछ समय बाद जब उनकी नींद खुली तो उन्होंने देखा कि उनकी श्रीमती का फोन आ रहा है। उन्होंने पूछा कब तक पहुँचोगे, तब उन्होंने खिड़की से बाहर देखा तो उन्हें एहसास हुआ कि बस तो अभी कार्यालय के मुख्य मार्ग से कुछ दूर ही पहुँची है एवं समय भी काफी हो गया है। उन्होंने अपनी श्रीमती जी को कुछ उत्तर नहीं दिया और कहा कि देखो कब तक घर पहुँचते हैं। उधर उनकी श्रीमती जी ने टीवी पर समाचार देखा कि भारी बारिश के कारण शहर के सारे मार्ग भारी जल भराव के कारण चलने लायक भी नहीं बचे हैं।

अब श्रीमान श्री भी सोच रहे थे कि क्या सोच कर शाम की चाय का सपना देखा था। वे अपनी बस से उतर कर फुटपाथ पर चढ़ कर घर की ओर चल दिए। उनका घर कार्यालय से मात्र 5 किलोमीटर की दूरी पर था जिसे वह बस से 30-40 मिनटों में तय कर लेते थे। आज बस में 2 घंटे बैठने के बाद भी सिर्फ 1 किलोमीटर की दूरी तय हुई थी। बाकी की

दूरी उन्होंने पानी से भरे रास्ते पर पैदल चल कर पार की। घर पहुँचने के बाद उन्होंने जब समय देखा, तो पाया कि यह तो उनके रात्रि के भोजन का समय हो चुका है।

श्रीमान श्री ने अपनी पत्नी से निवेदन किया कि आज खाने के साथ वे चाय की व्यवस्था भी कर दें। आज उनकी इच्छा शाम की चाय का आनंद लेने की थी, पर बारिश के कारण वह पूरी न हो सकी। उनकी श्रीमती जी भी अपने दैनिक कार्यों से थक गई थीं, मगर पानी से भरे रास्तों पर उनके चल कर घर आने के बारे में सोच कर, उन्होंने चाय की पत्तीली चूल्हे पर चढ़ा दी। थोड़ी हरी इलाईची के गरम पानी में छलकने और अदरक के कूटे जाने की आवाज से श्रीमान श्री को कुछ राहत मिली। उबलती हुई चाय की खुशबू लेते ही श्रीमान श्री ने लंबी सांस भरी, और आखिरकार, शाम की चाय का आनंद उन्होंने रात के भोजन के साथ ही लिया। □

हर व्यक्ति में कोई न कोई कलाकार छिपा होता है। केवल उसे तराशें। – जोसफ स्टालिन

व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ों से नहीं अपितु उसके चरित्र से आंकी जाती है। – महात्मा गांधी

यदि आपका प्रिय सौ बार भी रूठे, तो भी रूठे हुए प्रिय को मनाना चाहिए, क्योंकि यदि मोतियों की माला टूट जाए तो उन मोतियों को बार बार धागे में पिरो लेना चाहिए। – रहीम दास

गुवाहाटी स्मार्ट सिटी मिशन से आकांक्षाएं और इसकी चुनौतियाँ



श्री जयंत घोष

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

क्या है स्मार्ट सिटी ? इसका उत्तर यह है कि स्मार्ट सिटी की कोई सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत परिभाषा नहीं है। अलग-अलग लोगों के लिए इसका मतलब अलग-अलग होता है। स्मार्ट सिटी की अवधारणा, इसलिए, विकास के स्तर, परिवर्तन और सुधार की इच्छा, संसाधनों और शहर के निवासियों की आकांक्षाओं के आधार पर शहर से शहर और देश से देश में भिन्न होती है। स्मार्ट सिटी मिशन के दृष्टिकोण में, उद्देश्य उन शहरों को बढ़ावा देना है जो मुख्य बुनियादी ढांचा प्रदान करते हैं और अपने नागरिकों को जीवन की एक अच्छी गुणवत्ता, एक स्वच्छ और टिकाऊ वातावरण और स्मार्ट समाधानों के अनुप्रयोग प्रदान करते हैं। सतत और समावेशी विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है और विचार कॉम्पैक्ट क्षेत्रों को देखना है, एक प्रतिकृति मॉडल बनाना है जो अन्य महत्वाकांक्षी शहरों के लिए एक प्रकाशस्तंभ की तरह काम करेगा। सरकार का स्मार्ट सिटी मिशन एक साहसिक, नई पहल है। इसका उद्देश्य ऐसे उदाहरण स्थापित करना है जिन्हें स्मार्ट सिटी के भीतर और बाहर दोनों जगह दोहराया जा सकता है, जिससे देश के विभिन्न क्षेत्रों और हिस्सों में समान स्मार्ट सिटी के निर्माण को उत्प्रेरित किया जा सके।

पूर्वोत्तर राज्य असम के सबसे बड़े शहर गुवाहाटी को 2015 में भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत चुना गया था। मिशन का उद्देश्य स्थानीय विकास और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके आर्थिक विकास को बढ़ावा देना और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

स्पेशल पर्पस व्हीकल (एसपीवी) गुवाहाटी ने गुवाहाटी में स्मार्ट सिटी परियोजनाओं की योजना, डिजाइन, कार्यान्वयन, समन्वय और निगरानी के लिए एक विशेष प्रयोजन वाहन (एसपीवी)-गुवाहाटी स्मार्ट सिटी लिमिटेड (जीएससीएल) (प्राधिकरण) को शामिल किया है।

असाइनमेंट का मूल उद्देश्य प्रस्तावित एबीडी मॉड्यूल और पैन सिटी प्रस्ताव के विकास के लिए जीएससीएल का समर्थन करना है। टीसीई गुवाहाटी स्मार्ट सिटी प्रस्ताव के तहत क्षेत्र आधारित विकास परियोजना की योजना, डिजाइन, कार्यान्वयन और निगरानी में जीएससीएल का समर्थन करने के लिए रणनीतिक, सलाहकार, संपर्क, परामर्श और परियोजना प्रबंधन सेवाएं प्रदान करेगा।

एसपीवी की स्थापना 11 मई, 2016 को की गई थी। इसके अलावा, एसपीवी की कुल अधिकृत पूंजी 400.00 करोड़ रुपये है। एसपीवी की कुल चुकता पूंजी 378.00 करोड़ रुपये है।

गुवाहाटी स्मार्ट सिटी की संभावनाएँ/मुद्दे

स्मार्ट सिटी मिशन का उद्देश्य स्थानीय क्षेत्र के विकास और प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से प्रौद्योगिकी का उपयोग करके आर्थिक विकास को बढ़ावा देना और लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है, जो स्मार्ट परिणामों की ओर ले जाती है। क्षेत्र-आधारित विकास झुगियों सहित मौजूदा क्षेत्रों (रेट्रोफिट और पुनर्विकास) को बेहतर योजनाबद्ध क्षेत्रों में बदल देगा, जिससे पूरे शहर की रहने की क्षमता में सुधार

होगा। शहरी क्षेत्रों में बढ़ती आबादी को समायोजित करने के लिए शहरों के आसपास नए क्षेत्रों (ग्रीन फील्ड) का विकास किया जाएगा। स्मार्ट सॉल्यूशंस का अनुप्रयोग शहरों को बुनियादी ढाँचे और सेवाओं में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी, सूचना और डेटा का उपयोग करने में सक्षम बनाएगा। इस तरह के व्यापक विकास से जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा, रोजगार पैदा होगा और सभी के लिए, विशेष रूप से गरीबों और वंचितों के लिए आय में वृद्धि होगी, जिससे समावेशी शहर बनेंगे। शहर के विकास के लिए संभावित मुद्दे हैं –

- ◆ भूमि आवंटन
- ◆ राज्य निधि योगदान का सृजन
- ◆ शहर में घनी आबादी
- ◆ स्थानीय चुनौतियाँ
- ◆ हितधारक प्रबंधन
- ◆ राजनीतिक इच्छाशक्ति
- ◆ जवाबदेही

महत्वाकांक्षी योजनाओं और महत्वपूर्ण निवेशों के बावजूद, गुवाहाटी का स्मार्ट सिटी में परिवर्तन इन चुनौतियों और कमियों से भरा हुआ है–

1. बुनियादी ढाँचा और शहरी नियोजन मुद्दे

गुवाहाटी की स्मार्ट सिटी पहल के सामने आने वाले प्राथमिक मुद्दों में से एक इसके बुनियादी ढाँचे की अपर्याप्तता है। शहर खराब सड़क स्थितियों, अपर्याप्त सार्वजनिक परिवहन और लगातार यातायात भीड़ से जूझता है। मौजूदा शहरी नियोजन ढाँचे ने इन समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावी ढंग से स्मार्ट समाधानों को एकीकृत नहीं किया है, जिससे नियोजित विकास और जमीनी हकीकत के बीच अंतर पैदा हो गया है।

2. जल और अपशिष्ट प्रबंधन संकट

जल और अपशिष्ट प्रबंधन स्मार्ट सिटी के महत्वपूर्ण घटक हैं। गुवाहाटी को दोनों क्षेत्रों में गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पुरानी और अकुशल वितरण

प्रणालियों के कारण शहर अनियमित जल आपूर्ति और महत्वपूर्ण जल हानि से पीड़ित है। इसके अतिरिक्त, कचरा प्रबंधन प्रणालियाँ इष्टतम से बहुत दूर हैं, कचरा निपटान और रीसाइक्लिंग प्रक्रियाएँ पिछड़ रही हैं। एकीकृत अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली की कमी शहर की स्वच्छता समस्या को बढ़ा देती है।



3. तकनीकी एकीकरण और डिजिटल बुनियादी ढाँचा

स्मार्ट सिटी का एक मूलभूत पहलू शहरी जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का एकीकरण है। गुवाहाटी ने आवश्यक डिजिटल बुनियादी ढाँचे को लागू करने और बनाए रखने के लिए संघर्ष किया है। बुद्धिमान यातायात प्रबंधन प्रणाली, निगरानी और सार्वजनिक सूचना प्रणाली जैसे स्मार्ट समाधानों की तैनाती धीमी और असंगत रही है। इसके अलावा, हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी और निवासियों के बीच अपर्याप्त डिजिटल साक्षरता इन प्रौद्योगिकियों के प्रभावी उपयोग में बाधा डालती है।

4. अतिभारित सड़क अवसंरचना

वाहनों की बढ़ती संख्या को संभालने के लिए गुवाहाटी का सड़क बुनियादी ढाँचा अपर्याप्त है। संकरी सड़कें, सीमित फ्लाईओवर और अपर्याप्त संख्या में लेन के कारण बार-बार रुकावटें और ट्रैफिक जाम होते हैं। शहर के तेजी से शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि ने इन मुद्दों को बढ़ा दिया है तथा सड़क विस्तार परियोजनाएँ बढ़ती मांग के साथ तालमेल बिठाने में विफल रही हैं। यह अत्यधिक बोझ वाला बुनियादी ढाँचा

कुशल और सुचारू यातायात प्रवाह प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण बाधा है।

5. पर्यावरण संबंधी चिंताएँ

गुवाहाटी को प्रदूषण और खराब वायु गुणवत्ता सहित महत्वपूर्ण पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शहर के तेजी से शहरीकरण के कारण हरे-भरे स्थान कम हो गए हैं और प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण हुआ है। शहर की विकास योजनाओं में टिकाऊ प्रणालियाँ और हरित प्रौद्योगिकियों को शामिल करने के प्रयास न्यूनतम रहे हैं। यह निरीक्षण न केवल निवासियों के स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित करता है बल्कि स्मार्ट सिटी के सिद्धांतों को भी कमजोर करता है।

6. शासन और कार्यान्वयन अंतराल

किसी भी स्मार्ट सिटी परियोजना की सफलता के लिए प्रभावी प्रशासन महत्वपूर्ण है। गुवाहाटी की स्मार्ट सिटी पहल विभिन्न हितधारकों के बीच समन्वय की कमी और परियोजना निष्पादन में देरी के कारण बाधित हुई है। स्पष्ट, दीर्घकालिक दृष्टिकोण की अनुपस्थिति और अपर्याप्त निगरानी और मूल्यांकन तंत्र ने प्रगति में और बाधा उत्पन्न की है। परिणामस्वरूप, कई प्रस्तावित परियोजनाएँ अधूरी रह जाती हैं या अपेक्षित लाभ देने में विफल रहती हैं।

7. सार्वजनिक भागीदारी और सामुदायिक सहभागिता

एक सफल स्मार्ट सिटी मॉडल अपने नागरिकों की सक्रिय भागीदारी पर बहुत अधिक निर्भर करता है। गुवाहाटी में, प्रभावी सामुदायिक सहभागिता की उल्लेखनीय कमी रही है। कई निवासी या तो स्मार्ट सिटी पहल से अनजान हैं या अपने दैनिक जीवन में इसका कोई ठोस लाभ नहीं देखते हैं। सार्वजनिक परामर्श और फीडबैक तंत्र अपर्याप्त हैं, जिससे समुदाय की जरूरतों और कार्यान्वित की जा रही परियोजनाओं के बीच अंतर पैदा हो रहा है।

8. वित्तीय बाधाएँ और संसाधन आवंटन

स्मार्ट सिटी परियोजनाओं के विकास और रखरखाव में

फंडिंग एक महत्वपूर्ण कारक है। सीमित बजट आवंटन और उपलब्ध संसाधनों के अकुशल उपयोग के कारण गुवाहाटी को महत्वपूर्ण वित्तीय बाधाओं का सामना करना पड़ा है। राज्य या स्थानीय बजट से पर्याप्त योगदान के बिना केंद्र सरकार के धन पर निर्भरता के कारण देरी और अधूरी परियोजनाएँ हुई हैं। इसके अतिरिक्त, अस्पष्ट नीतियों के कारण निजी क्षेत्र का निवेश न्यूनतम रहा है।

9. स्वास्थ्य एवं सुरक्षा अवसंरचना

शहरी विकास में स्वास्थ्य और सुरक्षा सर्वोपरि है। गुवाहाटी का स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढाँचा अविकसित है, इसकी बढ़ती आबादी को पूरा करने के लिए अपर्याप्त अस्पताल, क्लीनिक और आपातकालीन सेवाएँ हैं। टेलीमेडिसिन और डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड जैसी स्मार्ट स्वास्थ्य पहल या तो अस्तित्वहीन हैं या खराब तरीके से कार्यान्वित हैं। इसके अलावा, स्मार्ट पुलिसिंग और आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली सहित सार्वजनिक सुरक्षा उपाय अपर्याप्त हैं, जो शहर की सुरक्षा से समझौता कर रहे हैं।

10. शिक्षा एवं कौशल विकास

किसी शहर को वास्तव में स्मार्ट बनाने के लिए, उसके नागरिकों को अच्छी तरह से शिक्षित और कुशल होना आवश्यक है। गुवाहाटी गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक संस्थानों और व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों की कमी से जूझ रहा है। सीखने के अनुभवों को बढ़ाने के लिए शिक्षा प्रणाली को स्मार्ट तकनीक के साथ प्रभावी ढंग से एकीकृत नहीं किया गया है। इसके अलावा, डिजिटल साक्षरता में एक अंतर है, जो आम जनता द्वारा स्मार्ट सिटी समाधानों को अपनाने और उपयोग में बाधा डालता है।

11. शहरी गरीबी और सामाजिक असमानता

गुवाहाटी में शहरी गरीबी और सामाजिक असमानता महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। शहरी गरीबों की जरूरतों की उपेक्षा करते हुए उच्च तकनीक समाधानों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए स्मार्ट सिटी परियोजनाओं की अक्सर आलोचना की गई

है। स्लम क्षेत्रों और अनौपचारिक बस्तियों में स्वच्छ पानी, स्वच्छता और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। इन बुनियादी मुद्दों को संबोधित करना समावेशी शहरी विकास के लिए महत्वपूर्ण है और यह सुनिश्चित करना है कि स्मार्ट सिटी पहल का लाभ सभी तक पहुँचे।

12. जलवायु लचीलापन और आपदा प्रबंधन

गुवाहाटी बाढ़ और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त है। हालाँकि, शहर की आपदा प्रबंधन प्रणालियाँ ऐसी घटनाओं की भविष्यवाणी करने, प्रबंधन करने और उनके प्रभाव को कम करने के लिए स्मार्ट प्रौद्योगिकियों से सुसज्जित नहीं हैं। जलवायु योजना और वास्तविक समय डेटा विश्लेषण की अनुपस्थिति शहर की आपदाओं के प्रति संवेदनशीलता को और बढ़ा देती है, जिससे महत्वपूर्ण मानवीय और आर्थिक नुकसान होता है।

13. प्रशासनिक पारदर्शिता और जवाबदेही

स्मार्ट सिटी परियोजनाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए प्रशासन में पारदर्शिता और जवाबदेही आवश्यक है। गुवाहाटी में, परियोजना निष्पादन में पारदर्शिता की कमी है, परियोजना की स्थिति, बजट और परिणामों की जानकारी तक सीमित पहुँच है। भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन की भी सूचना मिली है, जिससे स्मार्ट सिटी पहल में जनता का भरोसा कम हुआ है। मजबूत ई-गवर्नेंस समाधानों को लागू करने से पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ सकती है।

14. परिवहन और गतिशीलता

जबकि परिवहन में सुधार स्मार्ट सिटी पहल का एक प्रमुख लक्ष्य है, गुवाहाटी के प्रयास अपर्याप्त रहे हैं। सार्वजनिक

परिवहन प्रणालियाँ पुरानी, अविश्वसनीय और अत्यधिक भीड़भाड़ वाली हैं। शहर की यातायात प्रबंधन प्रणालियाँ यातायात प्रवाह को अनुकूलित करने और भीड़भाड़ को कम करने के लिए स्मार्ट प्रौद्योगिकियों के साथ एकीकृत नहीं हैं। इसके अतिरिक्त, साइकिल चलाने और पैदल चलने जैसे गैर-मोटर चालित परिवहन विकल्पों को पर्याप्त रूप से बढ़ावा नहीं दिया जाता है, जिससे स्थायी गतिशीलता समाधान सीमित हो जाते हैं।

निष्कर्ष

स्मार्ट सिटी की अवधारणा में न केवल तकनीकी प्रगति बल्कि सतत विकास, कुशल संसाधन प्रबंधन और जीवन की बेहतर गुणवत्ता भी शामिल है। गुवाहाटी का अनुभव एक पारंपरिक शहर को स्मार्ट शहर में बदलने की जटिलता पर प्रकाश डालता है। बुनियादी ढाँचे, प्रौद्योगिकी एकीकरण, पर्यावरण प्रबंधन और शासन में कमियाँ अधिक समग्र और समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता की ओर इशारा करती हैं। गुवाहाटी को अपनी स्मार्ट सिटी आकांक्षाओं को साकार करने के लिए, इन मूलभूत मुद्दों को संबोधित करना होगा और अपने अद्वितीय संदर्भ के अनुरूप नवीन समाधानों को अपनाना होगा।

गुवाहाटी में स्मार्ट सिटी मॉडल के कार्यान्वयन को बहुआयामी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो तकनीकी कमियों से परे हैं। इन मुद्दों के समाधान के लिए एक व्यापक रणनीति की आवश्यकता है जिसमें मजबूत बुनियादी ढाँचे का विकास, प्रभावी शासन, सक्रिय नागरिक भागीदारी और टिकाऊ संसाधन प्रबंधन शामिल हो। केवल एक समन्वित और समावेशी दृष्टिकोण के माध्यम से गुवाहाटी अपनी स्मार्ट सिटी आकांक्षाओं को प्राप्त करने और अपने सभी निवासियों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार की उम्मीद कर सकता है। □



सोशल मीडिया और इन्फ्लुएंसर्स



श्री दीपक जोशी
कनिष्ठ अनुवादक



मुंबई की गर्मियों की तड़कती धूप से बचने के लिए सोचा स्टारबक्स में बैठ कर कॉफी पी जाए। सबसे नजदीक स्टारबक्स मॉल के भीतर था। मॉल में जा कर ठंडी हवाओं के बीच अपनी शर्ट के कौलर को खींच कर ऐसा लगा मानो स्वर्ग में आ गए हों। लेकिन इस स्वर्ग में सभी के हाथ में शॉपिंग बैग थे। पिछली बार जब मॉल में आए थे, उस समय अपने बजट में कुछ खरीदने लायक लगा नहीं था। पता नहीं, स्कूल के बच्चों जैसे दिखने वाले भी खूब थैले लिए घूम रहे थे।

स्टारबक्स में भीड़ देख कर माथे पर पसीना तो आया पर एक कोने में बैठने की जगह मिल ही गई। ऑर्डर दे कर जब बैठे तो सामने की टेबल पर एक छोटा परिवार बैठा था। मम्मी, पापा और एक छोटी (करीब 10-11 साल की) बच्ची साथ बैठे थे। तभी कॉफी की तलब लिए एक बाल झटकाती

मोहतरमा ने स्टारबक्स का शीशे का दरवाजा खोला। एक हाथ में 2-4 शॉपिंग बैग और दूसरे हाथ में फोन का कैमरा खुद की ओर ताने, वीडियो बनाते हुए और साथ में दो और दोस्तों को लिए उसने ऑर्डर दिया। ऑर्डर लेने वाली स्टारबक्स की कर्मी ने जैसे भगवान को देख लिया हो। उसने तुरंत अपनी टोपी सीधी की और बोला 'मैं आपके सारे ब्लॉग्स देखती हूँ। मेरी बहन भी आपके वीडियो देखती है यूट्यूब पर। सब्सक्राइबर है! आपने ये ड्रेस लाजपत नगर वाले हौल वीडियो में ली थी न!'

'वाओ! सब्सक्राइबर! तो गायज़, यहाँ स्टारबक्स में हमें हमारे सब्सक्राइबर मिल गए हैं और अब शॉपिंग करने के बाद हम आ गए हैं कॉफी पीने और स्टारबक्स तो आप जानते ही हो, हमें कितना पसंद है!' अब तक पूरा स्टारबक्स ये जान गया था कि एक लघु सेलेब्रिटी ने कॉफी का ऑर्डर दे दिया है। एक दो लोग उठकर सीधा इस बात की पुष्टि करने लगे कि क्या ये वही है जिसके सोशल मीडिया पर लाखों फॉलोवर हैं और जो खुद को लाइफस्टाइल ब्लॉगर कहती है? जैसे ही इस बात की पुष्टि किसी ने की, तो लोग फोटो खिंचवाने के लिए भीड़ लगाने लगे। चमचमाते काले चश्मे जो अभी तक उसके ललाट पर सजे थे, वो अब उसकी आँखों को ढके हुए थे। पब्लिक में काला चश्मा पहन कर कोई बैठे, तो लोग काफ़ी गंभीरता से आपको देखते हैं। आपकी धाक थोड़ी अधिक जमती है। आप

बाकी लोगों को ऐसे देखते हैं जैसे वो कोई परग्रही हों। मुंबई में टेलीविजन के कई मशहूर कलाकार, काले चश्मे लगाए कॉफी की चुस्कियाँ लेते दिख ही जाते हैं। ऐसे में एक चहचहाती, थोड़ी सी नामचीन, इंस्टाग्राम सेलिब्रिटी अगर काला चश्मा पहन कर, कॉफी पी ले, तो लोग मुड़ कर देख ही लेते हैं। पर यहाँ तो फोटो खिंचवाने और अपना नाम अपने वीडियो में बुलवाने वालों की भीड़ इकट्ठा हो गई थी।

सामने बैठे छोटे परिवार ने भी गर्दन मोड़ कर देखा। माइक्रोफोन पर फ़र की टोपी लगाए, भौहें उचकाती इस गुड़िया को देखकर वे भी चौंक गए। तभी उस बच्ची ने अपनी माँ का हाथ खींच कर कहा— ‘कल आपने पूछा था ना कि बड़े हो कर क्या बनना है?’ लेकिन माँ की आँखें उस लघु सेलिब्रिटी के दिव्य तेज की ओर से ध्यान नहीं हटा पा रही थीं। ‘मुझे भी ऐसे ही बनना है। पढ़ के क्या होगा? देखो बस मॉल में घूमना है, शॉपिंग करना है और उस मस्त शॉपिंग की वीडियो ही तो बनानी है। चलो ना हम उसके साथ फोटो ले कर आते हैं।’

इतने में हमारा ध्यान भी उस बच्ची पर गया। क्या खूब पहचाना है इसने एक इंफ्लुएंसर को! जी हाँ— इंफ्लुएंसर। और यहाँ हम सोशल मीडिया के प्रभाव पर एक निबंध तो क्या, एक अनुच्छेद भी ढंग से नहीं लिख सकते। काफी प्रभावशाली हैं ये इंफ्लुएंसर। सोशल मीडिया पर इन्हीं का बोलबाला है। अब तो बच्चों की अभिलाषा भी इंफ्लुएंस होने लगी है। इतनी खुमारी छाई हुई है कि खाने से लेकर फिटनेस तक, यह एक उद्योग बन चुका है। महत्वकांक्षाएँ अब लाइक्स, फॉलोवर्स और एंगेजमेंट के इर्द गिर्द ही घूम रही है। और इन सब का मुख्य लक्ष्य है— पैसा, खूब सारा पैसा।

इंफ्लुएंसर विभिन्न विषयों पर अपनी राय व्यक्त करने, कंपनियों को बढ़ावा देने और अपनी जीवनशैली प्रदर्शित

करने के लिए अक्सर सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। अपने अनुयायियों तक अपनी वस्तुओं और सेवाओं का विपणन करने के लिए, वे अक्सर ब्रांडों और कंपनियों के साथ काम करते हैं। प्रभावशाली लोगों को उनके उद्योग में अधिकारियों के रूप में देखा जाता है, और उनके अनुयायी अक्सर सलाह और प्रेरणा के लिए उनके पास आते हैं। इस प्रकार, उनकी सिफ़ारिशें बहुत प्रेरक हो सकती हैं। कुछ समय पहले ही एक सोशल मीडिया सेलिब्रिटी को सांपों के जहर और उनकी तस्करी के मामले में जेल भेजा गया है। यह सब देख कर तो यही लगता है कि इस तरह की इंफ्लुएंस जरूरत से कुछ ज्यादा ही जहरीली है।

कोविड महामारी के समय जब टीवी के सीरियल की शूटिंग बंद हुई, तो यूट्यूब के कपाट खुल गए। बच्चे, वयस्क सभी इंटरनेट के सागर की लहरों के मजे लेने लगे। हर ओर त्रासदी छाने की खबरों के बीच, टीवी सीरियल/फिल्म के कलाकारों के घरों की झलक मिली। सब अपनी दिनचर्या यूट्यूब पर दिखाने लगे। जिसको हमेशा पर्दे पर देखा, वह जब जमीन पर बैठकर झाड़ू लगाता हुआ दिखा, तो सबको वह अपने जैसा लगा। यही दिखा दिखा कर कब ब्रांड प्रमोशन हो गया, लोगों को पता ही नहीं चला। जितने लोग वीडियो देखते गए, उतने व्यूज बढ़ते गए और उतने पैसे बनते गए। इतने आराम से पैसे कमाते कमाते सभी ने धीरे-धीरे अपने चैनल खोल दिए। व्यूज और लाइक्स की होड़ में, सब भूल गए कि लोग देखना क्या चाहते हैं। महामारी आई और चली गई, और कैमरा घर से कब मॉल में पहुँच गया, पता ही नहीं चला। आज बच्चों पर इसका इतना दुष्प्रभाव पड़ा है, कि अब उनकी नजरें मोबाइल से नहीं हटती। सब वैसा ही जीवन जीने की आशा रखते हैं, जैसा यूट्यूब या इंस्टाग्राम पर दिखाई देता है। बच्चों को इंफ्लुएंसर ही प्रेरणादायक लगते हैं, क्योंकि कैमरे पर

उनका जीवन बेहद आसान और सुंदर और फला फूला दिखता है।

वर्तमान में प्रौद्योगिकी के अत्यधिक प्रयोग ने इस पीढ़ी के दिमाग को मोहित कर लिया है, और बच्चे सोचते हैं कि यह बिल्कुल सामान्य है, और इसे ऐसा ही होना चाहिए। इंटरनेट पर ऑनलाइन करने, देखने, खेलने, तलाशने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन इसमें समझदारी, गहराई या आध्यात्मिकता बहुत कम है। ऊपर से इंफ्लुएंसर कल्चर ने इसमें आसानी से पैसे कमाने का तड़का और लगा दिया है। अगर किसी यूट्यूबर के शिशु को चोट लगती है, तो वह डॉक्टर को बुलाने से पहले कैमरा उठाता है। उसे पता है कि बच्चा रोएगा तो लोगों में उत्सुकता जागेगी कि बच्चे को क्या हुआ है। एक एक करके सभी इंफ्लुएंस हो कर नकलची बनते जा रहे हैं। विभिन्न उत्पादों के प्रचार का माध्यम अब ये इंफ्लुएंसर ही हैं। मटीरियलिज़्म और जल्दी-जल्दी पैसा कमाने की लहर चारों ओर छाई हुई है। आज मैंने यह खरीदा, आज इस मॉल में गए, अब घर का टूर, कभी घर के कलेश, यहाँ तक कि ओपरेशन थिएटर तक, कुछ भी अब कैमरे से अछूता नहीं है। रोज नया कॉन्टेन्ट दिखाने की चिंता, व्यूज़ के गिरने की चिंता, यूट्यूब के दिशानिर्देशों के गलती से भी उल्लंघन हो जाने की चिंता, यह सब कैमरे पर दिखाया नहीं जाता।

युवा और बच्चे खुद को दूसरों से अधिक दिखाने के दबाव के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं और लगातार अपनी

तुलना उन लोगों से करते हैं जिन्हें वे सोशल मीडिया पर देखते हैं। इस प्रकार, यह बनावटी वास्तविकता युवाओं के लिए संभावित रूप से अधिक हानिकारक है। इंफ्लुएंसर कल्चर एक बहुत ही बनावटी और कृत्रिम दुनिया है, और यह गौरतलब है कि हम सभी इसके प्रति जागरूक रहें। हमें दूसरे लोगों से अपनी तुलना करने से बचना चाहिए, क्योंकि हमारी और दूसरों की भावनाएं, परिस्थितियाँ एवं किसी चीज़ के प्रति रुझान अलग-अलग हो सकते हैं। सोशल मीडिया पर दिखने वाली चमचमाती ऐश और आराम की जीवनशैली सभी का ध्यान आकर्षित करती है। इसके परिणामस्वरूप, लोग इंफ्लुएंसर्स के साथ बने रहने के लिए लगातार नई चीज़ें खरीदने का दबाव महसूस करते हैं, जो कि सही नहीं है। इसके अलावा, हमें स्वचालित रूप से यह मानने से बचना चाहिए कि सोशल मीडिया पर कोई पोस्ट प्रामाणिक या भरोसेमंद है। कोई भी वस्तु जो किसी इंफ्लुएंसर के द्वारा दिखाई जा रही है, जरूरी नहीं कि वह वस्तु अच्छी हो, या हमें उसकी कोई आवश्यकता हो। भव्य वस्तुओं और अनुभवों को दिखा कर, इंफ्लुएंसर कल्चर एक ऐसे सुख को प्रोत्साहित करता है, जो केवल बाहरी सुंदरता पर आधारित है।

अतः इंटरनेट, इंफ्लुएंस और मटीरियलिज़्म के दौर में पूर्ण सच्चाई की उम्मीद न करें और सही मायने में सही लोगों से प्रेरणा लें। □

मैं हिंदी के जरिए प्रांतीय भाषाओं को दबाना नहीं चाहता, किन्तु उनके साथ हिंदी को भी मिला देना चाहता हूँ।

– महात्मा गांधी

प्रभु जगन्नाथ



श्रीमती अंजलि कुमारी

पत्नी- श्री मनीष भास्कर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



पुरी का श्री जगन्नाथ मंदिर एक प्रसिद्ध हिन्दू मंदिर है, जो भगवान जगन्नाथ (श्री कृष्ण) को समर्पित है। यह भारत के ओडिशा राज्य के तटवर्ती शहर पुरी में स्थित है।

इस मंदिर को हिन्दुओं के चार धाम में गिना जाता है। यह एक वैष्णव मंदिर है, जो भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण को समर्पित है।

इस मंदिर के उद्गम से जुड़ी परम्परागत कथा के अनुसार भगवान जगन्नाथ की नील मणि से निर्मित मूल मूर्ति अगर

वृक्ष के नीचे मिली थी। मालवा नरेश इंद्रधुम्न को स्वप्न में यही मूर्ति दिखाई दी थी। तब उसने कड़ी तपस्या की और तब भगवान विष्णु ने उसे बताया कि वह पुरी के समुद्र तट पर जाए। वहाँ उसे एक दर लकड़ी का लट्ठा मिलेगा। इस लकड़ी से वह मूर्ति का निर्माण कराए। राजा ने ऐसा ही किया और उसे लकड़ी का लट्ठा मिल भी गया। तब विश्वकर्मा बढ़ई कारीगर के रूप में उसके सामने उपस्थित हुए। तब उन्होंने एक शर्त रखी कि वे एक माह में मूर्ति तैयार कर देंगे और तब तक वह इस कमरे में बंद रहेंगे, और राजा या कोई भी उस कमरे के अंदर नहीं आएगा। माह के अंतिम दिन जब कई दिनों तक कोई भी आवाज नहीं आई तो उत्सुकता पर राजा ने कमरे में झाँका और वह कारीगर द्वार खोल कर बाहर आ गया और उसने राजा से कहा कि मूर्तियाँ अभी अपूर्ण हैं और उनके हाथ अभी नहीं बने हैं। राजा के अफसोस करने पर मूर्तिकार ने बताया कि यह सब दैववश हुआ है और यह मूर्तियाँ ऐसे ही स्थापित हो कर पूजी जाएँगी। तब वहीं तीनों-भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और माता सुभद्रा की मूर्तियाँ मंदिर में स्थापित की गईं।

यहाँ विस्तृत दैनिक पूजा अर्चना होती है। यहाँ कई वार्षिक त्योहार भी मनाए जाते हैं जिनमें देश विदेश से कई लोग शामिल होते हैं। इनमें सर्वाधिक महत्व रथ यात्रा का त्योहार है जिसका प्रति वर्ष 'आषाढ़ शुक्ल पक्ष की द्वितीय तिथि' को लगभग जून या जुलाई माह में आयोजन किया जाता है। इस उत्सव में तीनों मूर्तियाँ अति भव्य और विशाल रथों पर

सुसज्जित कर नगर यात्रा पर निकाली जाती हैं। यह यात्रा 5 किलोमीटर लंबी होती है। इस यात्रा में लाखों लोग भाग लेते हैं। रथ यात्रा में रथ विशाल पहिए वाली लकड़ी की संरचनाएँ हैं जो हर साल नए सिरे से बनाई जाती हैं और भक्तों द्वारा खींची जाती है। रथ यात्रा को गुंडिचा यात्रा भी कहा जाता है। विश्व प्रसिद्ध भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा में नगर भ्रमण करने के लिए भगवान अपनी बहन सुभद्रा और भाई बलराम संग निकलते हैं। फिर गुंडिचा माता के मंदिर में प्रवेश कर कुछ दिनों के लिए आराम करते हैं। फिर आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि को इस यात्रा का समापन होता है। इस यात्रा में तीनों रथों की अपनी एक अलग विशेषता होती है। भगवान जगन्नाथ के रथ का नाम नंदीघोष, भगवान बलभद्र के रथ का नाम तालध्वज, और माता सुभद्रा के रथ का नाम दर्पदलन है। मुख्य मंदिर के प्रस्थान की तरफ की यात्रा को बहुदा यात्रा कहते हैं। यह मंदिर बड़ा ही रहस्यमय है और इसका सबसे बड़ा रहस्य है मंदिर पर लगा ध्वज जो हमेशा हवा की विपरीत दिशा में लहरता है।

इस मंदिर की कुछ विशेषताएँ:

- ♦ मंदिर की ऊँचाई 214 फीट है।
- ♦ पुरी में किसी भी स्थान से मंदिर के शीर्ष पर लगे सुदर्शन चक्र को देखने से वह सदैव खुद के सामने ही दिखता है।
- ♦ अन्य जगहों पर हवा समुद्र से जमीन की तरफ आती है और शाम के समय विपरीत लेकिन पुरी में इसका उल्टा होता है।
- ♦ मंदिर के गुंबद की छाया दिन के किसी भी समय नहीं दिखती है।

- ♦ मंदिर का रसोईघर दुनिया का सबसे बड़ा रसोईघर है।
 - ♦ मंदिर की रसोई में प्रसाद पकाने के लिए मिट्टी के बर्तन एक दूसरे पर रखे जाते हैं और सब कुछ लकड़ी पर ही पकाया जाता है। इस प्रक्रिया में शीर्ष बर्तन की सामग्री पहले पकती है फिर क्रमशः नीचे की तरफ एक के बाद एक बर्तन की सामग्री पकती जाती है।
 - ♦ मंदिर के अंदर पकाने के लिए भोजन की मात्रा पूरे वर्ष के लिए रहती है।
 - ♦ यहाँ का प्रसाद न ही कभी व्यर्थ होता है और न ही कभी कम पड़ता है।
 - ♦ मंदिर के सिंह द्वार में पहला कदम प्रवेश करने पर ही समुद्र की ध्वनि नहीं सुनाई देती है और वहीं मंदिर से बाहर एक भी कदम रखने पर समुद्र की ध्वनि का अनुभव किया जा सकता है।
 - ♦ प्रतिदिन शाम के समय में मंदिर के ऊपर उल्टा चढ़कर मंदिर का ध्वज मानव द्वारा बिना किसी सहायता के बदल जाता है।
 - ♦ मंदिर के ऊपर से कोई भी हवाई जहाज नहीं जा सकता तथा पक्षी भी उड़ते हुए दिखाई नहीं देते।
- सच, बड़ी ही अद्भुत माया है प्रभु की। जीवन में अवसर मिले तो एक बार दर्शन तो अवश्य ही करने चाहिए भगवान जगन्नाथ के।

जय जगन्नाथ ।

सबसे बड़ा धर्म है अपने स्वभाव के प्रति सच्चा होना। स्वयं पर विश्वास करो।

– स्वामी विवेकानंद

बनारस में एक दिन



श्री अभिनव कुमार चौधरी
लेखापरीक्षक

दुनिया के सबसे आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण शहरों में से एक, बनारस की मेरी यात्रा मेरे गृहनगर दरभंगा से शुरू हुई। जैसे ही मैं रेलगाड़ी में चढ़ा, मन की प्रत्याशा स्पष्ट थी, उत्साहित लेकिन चिंतनशील। बनारस सदियों से एक पवित्र स्थान के रूप में पूजनीय रहा है जहाँ जीवन और मृत्यु का मिलन होता है, एक ऐसा शहर जो हिंदू धर्म के गहन दर्शन का प्रतीक है। ट्रेन के पहियों की लयबद्ध गड़गड़ाहट और डिब्बों की धीमी गति आत्मनिरीक्षण के लिए एक माहौल सा तैयार कर रही थी। जैसे ही हमने विशाल मैदानों और छोटे-छोटे गांवों को पार किया, मैं उन अनगिनत आत्माओं के बारे में सोचने से खुद को रोक नहीं सका, जो सदियों से इस मार्ग पर यात्रा करते हुए इसकी पवित्रता के कारण बनारस की ओर खिंची चली आई थीं। वाराणसी किसी के लिए पर्यटन स्थल तो किसी के लिए इस जीवन यात्रा का गंतव्य सा है। काशी (शहर का दूसरा नाम) का दौरा करना मेरे लिए पर्यटन से कहीं अधिक है, यह समय के चिन्हों पर सजे इतिहास में एक तीर्थयात्रा सा है। काशी शब्द में ही एक आभा, एक रहस्य है। शायद इसीलिए कोई एक नाम इस शहर के सार को नहीं पकड़ सकता।

अपनी सीट पर बैठे खिड़की से खुले आसमान को निहारते मैं यह सब सोच ही रहा था की तभी रेलगाड़ी एक झटके रुकी और मैंने जनवरी की ठंड में शाल में खुद को लपेटे ट्रेन से बाहर कदम रखा। पाँच घंटे का सफर लगा जैसे पल भर में पूरा हो गया। प्लेटफार्म पर स्थानीय हवा में फैली इतिहास

की खुशबू, संस्कृति की तीक्ष्णता और समय के स्पर्श ने मुझे एक गर्माहट का एहसास कराया। स्टेशन से बाहर निकलते ही धूप की सुगंध और दूर से बजती मंदिर की घंटियों की आवाज से हवा घनी महसूस होने लगी। हलचल भरी सड़कों से होते हुए मैं मणिकर्णिका घाट के पास अपने अस्थाई आवास पर पहुँच गया। घाट की निकटता ने मेरे प्रवास के आकर्षण को और बढ़ा दिया; मैं काशी की जीवनधारा, गंगा के सार को पास में बहता हुआ महसूस कर सकता था।

गंगा घाट पर भोर

अपनी पहली सुबह, मैं सुबह 4 बजे उठा, अंतर्मन के कौतुक और श्रद्धा की भावना से प्रेरित हो कर जैसे ही मैं सुबह की आरती के लिए दशाश्वमेध घाट की ओर बढ़ा, सुबह की शांति ने मुझे घेर लिया। मैं घाट के पास पहुँचा, मेरा स्वागत माँ गंगा की शांत सुंदरता ने किया। नदी का पानी भोर की रोशनी में धीरे-धीरे चमक रहा था। उन क्षणों को स्मृतियों में कैद करते हुए मैं अचंभित सा बस स्तब्ध देखता रह गया, जो समय की सीमाओं से परे थे। सुबह की आरती मेरे जैसे गहन



आध्यात्मिक अर्थ की खोज करने वाले व्यक्ति के लिए एक अनोखा अनुभव था। पुजारियों द्वारा अनुष्ठान करते, नदी में दीप और फूल चढ़ाते हुए दृश्य ने एक अद्भुत माहौल बना दिया। मंत्रोच्चार, धूप की सुगंध और सीढ़ियों से टकराते पानी की आवाज ने मिलकर एक दिव्य वातावरण का निर्माण कर दिया था। उस पल में, मुझे ब्रह्मांड के साथ एक घनिष्ठ संबंध महसूस हुआ, अलौकिक शाश्वत चक्र की एक झलक मिली जिसका प्रतिनिधित्व बनारस करता है।

मन में विचारों का लहर सा उठ खड़ा हुआ। मैं खुद को पुरातनता के मादक अमृत में डुबाने का इंतजार नहीं कर सका; घाटों, मंदिरों, स्ट्रीट फूड और इतिहास का नगर काशी हर संकरी गली में लापरवाही से बिखरा हुआ है। परिवेशीय ध्वनि वाहनों और आधुनिक उपकरणों का सामान्य शोर नहीं है, बल्कि अनादि काल से सांस ले रही मानवता की भक्ति, मग्न अराजकता और मौन का अनहद नाद है। अलग-अलग समयकाल की धुंधली इमारतों की पृष्ठभूमि में आपके सामने जो रंगपट्ट सामने आता है, उसमें ऐसे लोग हैं जिन्हें आप वर्गीकृत नहीं कर सकते। भगवा वस्त्रधारी साधु, नग्न अघोरी, अपरिवर्तित शहरी लोग, बीच में कहीं फँसे युवा और स्थानीय लोगों के रूप में खुद को पेश करने की कोशिश कर रहे चमकीले परिधान पहने विदेशी पर्यटक। बनारस आपकी सभी इंद्रियों पर हमला करता है और आपके अंतर्मन में व्याप्त प्रश्नों को जैसे जड़ सा कर देता है। खैर, इन विचारों के बवंडर के मध्य आरती पूरी हुई और मैं बढ़ चला अपने अगले ठिकाने के ओर।

विश्वनाथ मंदिर के दर्शन

मेरा अगला पड़ाव विश्वनाथ मंदिर था, जो भगवान शिव को समर्पित है। मंदिर का इतिहास विभिन्न किंवदंतियों और महत्वपूर्ण घटनाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। परंपरा के अनुसार, मूल मंदिर का निर्माण स्वयं महादेव शिव ने किया था और यह हजारों वर्षों से निरंतर पूजा का स्थल रहा है। ऐसा कहा जाता है कि पूरे इतिहास में मंदिर को कई बार नष्ट किया



गया और फिर से बनाया गया। विशेष रूप से, इसे 1669 में मुगल सम्राट औरंगजेब ने ध्वस्त कर दिया था, जिसने उस स्थान पर एक मस्जिद का निर्माण किया था। वर्तमान मंदिर का निर्माण 1780 में मराठा शासक अहिल्याबाई होल्कर द्वारा उसी स्थान पर किया गया था। काशी में शिव लिंग स्वयंभू है। ऐसा माना जाता है कि जब ऋषि विश्वनाथ ने भगवान शिव से प्रार्थना की, तो देवता काशी में लिंगम के रूप में प्रकट हुए। ऐसा कहा जाता है कि इस दिव्य अभिव्यक्ति ने काशी को शिव उपासकों के लिए सबसे पूजनीय स्थान बना दिया है।

हाथ में जल, पुष्प माला इत्यादि लिए जब मैं मंदिर में खड़ा था, उत्साही भक्तों से घिरा हुआ, मुझे एक अनोखे से अपनेपन की अनुभूति हुई। मंदिर के दीवारों की जटिल वास्तुकला और हवा में तैरती भक्ति की गूंज ने मुझे जीवन के गहरे अर्थ की याद दिला दी। लोग भगवान को देखने और उन्हें दूध चढ़ाने के लिए खड़े थे, इंतजार कर रहे थे, संघर्ष कर रहे थे, धक्का-मुक्करी कर रहे थे। बीच-बीच में भीड़ में से कोई न कोई चिल्लाता, बम-बम भोले! और उसके बाद फिर से भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती। जैसे जैसे आप मंदिर के करीब पहुंचते हैं तो आवाजें और भी तेज हो जाती हैं। कई लोग कई मंत्रों का जाप कर रहे थे और एक स्वर में ओम नमः शिवाय का जाप कर रहे थे। मैं भाग्यशाली था कि शाम के अनुष्ठान के लिए पूजा कक्ष बंद होने से पहले ही मैं कक्ष में पहुंच गया। दीयों और

अगरबत्तियों के धुएँ से कमरे का ऊपरी हिस्सा काला हो रहा था। मुझे लगभग 30 सेकंड का दर्शन हुआ जिसमें मैंने जल, दूध और पुष्प चढ़ाया जो मैंने आधा किलोमीटर पहले किसी दुकान से खरीदा था।

उस पवित्र स्थान में, मैंने अस्तित्व की वास्तविकता, हमारे भौतिक रूपों की क्षणिक प्रकृति और हम सभी को बाँधने वाली ऊर्जा को जैसे महसूस सा किया। मुझे एहसास हुआ कि जीवन आत्म-खोज की एक यात्रा है, और मृत्यु केवल अस्तित्व की दूसरी अवस्था में प्रवेश।

बनारस का स्वाद

मेरी पूजा समाप्त होते होते, बनारस की हलचल भरी सड़कें स्वादिष्ट स्ट्रीट फूड के महक से अंगड़ाई ले उठी थीं। मैंने खाने में कचौड़ी और आलू की सब्जी खाई, उसके बाद टमाटर वाली प्रसिद्ध बनारसी चाट खाई मसालेदार, तीखी और पूरी तरह से संतोषजनक। स्वाद मेरी तालु पर नाचने लगा, और मैंने हर टुकड़े का स्वाद लिया, यह जानते हुए कि बनारस में भोजन सिर्फ भूख मिटाने का माध्यम नहीं है; यह एक ऐसा अनुभव है जो आपको शहर की जीवंत संस्कृति से जोड़ता है। शाम को मैंने लस्सी का आनंद लिया, जो कि एक ठंडी, मलाईदार दही की पेय थी। यह गर्मियों में एक ताजगी का अनुभव देती है। यहाँ का हर एक व्यंजन एक कहानी कहता है। यहाँ के व्यंजनों में सिर्फ सामग्री का ही नहीं, बल्कि प्यार और भक्ति का भी एक स्पर्श होता है।

मणिकर्णिका घाट पर शाम

जैसे ही सूरज डूबा, मैं बनारस के सबसे प्रसिद्ध शमशान घाट मणिकर्णिका घाट पर लौट आया। वहाँ के अनुष्ठानों को देखना मेरे लिए भावुक करने वाला काल था। जब परिवार अपने प्रियजनों को विदाई दे रहे थे, आग की लपटें नाच रही थीं और मैं जीवन और मृत्यु की मार्मिक वास्तविकता से मूक हो कर बस भारी मन से यह सब देख रहा था। यहाँ गम और जश्न के बीच मुझे काशी का असली मर्म समझ में आया। यह एक ऐसी जगह है जहाँ एक यात्रा के अंत को दूसरी यात्रा की



शुरुआत के रूप में मनाया जाता है। मृत्यु और परिवर्तन को गले लगाने वाले तपस्वी अघोरियों की उपस्थिति ने शहर में जीवन के सभी रूपों की खुली स्वीकृति को जैसे स्पष्ट सा कर दिया था। भगवान शिव की शिक्षाएँ पूरे शहर में गूँजती हैं, यह याद दिलाती है कि विनाश भी सृजन का एक रूप है। काशी में, मैंने सीखा कि पूरी तरह से जीने के लिए, व्यक्ति को जीवन और मृत्यु दोनों को गले लगाना चाहिए, यह समझते हुए कि वे एक बड़े ब्रह्मांडीय नृत्य का हिस्सा हैं।

काशी यात्रांत

रात्रि विश्राम के बाद अगली सुबह मेरी वापसी की ट्रेन थी। सुबह रेलगाड़ी में बैठकर मैं घर की दिशा में चल पड़ा। मैं जीवन बदलने वाले इस अनुभव के लिए कृतज्ञता की भावना से भर गया। इस शहर ने न केवल मेरी आध्यात्मिक समझ को गहरा किया है बल्कि मुझे अपनी जीवन यात्रा पर विचार करने के लिए भी प्रोत्साहित किया है। काशी एक गहन अनुस्मारक है कि जीवन क्षणभंगुर है, और हमें हर पल को संजोना चाहिए। मैं काशी गया था खाली हाथ लेकिन अपने साथ प्रेम, मुक्ति बोध और आत्मा की शाश्वत प्रकृति का संदेश लेकर काशी से वापस आया। काशी सिर्फ एक जगह नहीं है; यह हमारे अस्तित्व की एक अवस्था है।

“बनारस इतिहास से भी पुराना है, परंपरा से भी पुराना है, किंवदंतियों से भी पुराना है, और इन सबको मिला कर भी दोगुना पुराना दिखता है।” – मार्क ट्वेन



श्रीमती पूजा रानी

पत्नी - श्री दीपक कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सफर

माँ शब्द अमृत के समान,
 इस शब्द का महत्व तब जाना ।
 जब किया तय बेटी से माँ बनने का सफर,
 सफर आगे बढ़ता गया तब,
 मेरी ममता का भाव बढ़ता गया ॥

जब तक एक बेटी थी, 'माँ' सिर्फ जरूरत थी,
 'माँ' बनी तब समझा कि,
 यह एक एहसास है ।

'माँ' बेटी का रिश्ता कुछ, दोनों के लिए खास है,
 जो बीत गया है समय, आज वह सामने है ॥

दहेज

घर में बेटी हुई
 खुश हुई खुशियां बढ़ीं
 नाजो से पत्नी
 फूलों में बढ़ी
 एक समय जब आया
 बड़ी हुई उसकी काया
 सभी थे अब उदास
 जाने का वक्त आया पास
 उदासी इस बात की थी
 दहेज की रकम
 कुछ खास थी
 जमा करके
 माँ बाप अब हारे
 कर सकेंगे उसे लड़के के हवाले
 दहेज पर थी खुशियाँ भारी
 हाय क्यों बेटी
 हमारे घर आई
 बेटी होना माँ बाप पे
 पड़ गया भारी
 सोच में है
 ये दुनिया सारी ।

गुवाहाटी शहर का आधिकारिक पशु -शिसु



सुश्री जयती घोष

पुत्री-श्री जयंत घोष, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



असम में गुवाहाटी भारत का पहला शहर है जिसने अपना आधिकारिक शुभंकर घोषित किया है, जिसमें गंगा डॉल्फिन को शहर के जानवर के रूप में नामित किया गया है। यह कदम गुवाहाटी की शहरी जैव विविधता में जन जागरूकता पैदा करने और संरक्षण चिंताओं को उजागर करने के लिए निर्देशित है।

तीन जानवर जो विलुप्त होने के कगार पर हैं, उन्हें शहर के जानवर के लिए नामांकित किए गए थे- ब्लैक सॉफ्टशेल कछुआ, ग्रेटर एडजुटेड सारस और गंगा नदी डॉल्फिन।

कछुआ अपने मांस और अंडों के व्यापार और निवास स्थान के विनाश के कारण विलुप्त होने के जोखिम का सामना कर रहा है। सारस की वैश्विक आबादी 1,200 से कम है। ब्रह्मपुत्र में पाई जाने वाली गंगा डॉल्फिन भी निवास स्थान के विनाश से पीड़ित हैं और उनका मांस और तेल के लिए व्यापार किया जाता है। वे अक्सर अन्य मछलियों के साथ गिलनेट और मछली पकड़ने के हुक में फँस जाते हैं।

शहर के जानवर का चयन ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से आयोजित मतदान प्रक्रिया के माध्यम से किया

गया था, जो 7 मार्च को शुरू हुई और तीन महीने तक चली जो 5 जून, 2016 को समाप्त हुई।

अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए जिला आयुक्त, कामरूप (महानगर) के कार्यालय के परिसर में मतदान बूथ स्थापित किए गए थे। मतदान प्रक्रिया से संबंधित जानकारी भी सार्वजनिक स्थानों पर लगाई गई थी। गुवाहाटी के 76 स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों ने ऑफलाइन वोटिंग प्रक्रिया में भाग लिया।

गंगा डॉल्फिन, जिसे शिसु कहा जाता है, 24,247 वोटों के साथ स्पष्ट विजेता के रूप में उभरी, इसके बाद ग्रेटर एडजुटेड स्टॉक (18,454 वोट) और ब्लैक सॉफ्टशेल टर्टल (17,302 वोट) थे। पूरे प्रचार के दौरान कुल 60,003 वोट मिले। इसके पीछे मुख्य तर्क जागरूकता बढ़ाना और शहरी जैव विविधता का संरक्षण करना था। बाघों और गैंडों के प्रति उचित सम्मान के साथ, हमारे आसपास रहने वाले जीव अधिक नहीं तो समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। बाघ और ऐसे अन्य जानवर संरक्षित क्षेत्रों में रहते हैं, जहाँ एक आम आदमी की पहुँच प्रतिबंधित है। लेकिन एक आम आदमी का प्रयास शहरी जैव विविधता की रक्षा में एक लंबा रास्ता तय कर सकता है।

डॉल्फिन कछुओं, मगरमच्छों और शार्क की कुछ प्रजातियों के साथ दुनिया के सबसे पुराने जीवों में से एक हैं। गंगा नदी डॉल्फिन को आधिकारिक तौर पर 1801 में खोजा गया था। गंगा डॉल्फिन कभी नेपाल, भारत और बांग्लादेश की गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना और कर्णफुली-सांगु नदी तंत्रों में रहते

थे। लेकिन यह प्रजाति अपनी अधिकांश प्रारंभिक वितरण श्रेणियों से विलुप्त है।

गंगा डॉल्फिन केवल मीठे पानी में रह सकती है और पूरी तरह से अंधी है। वे अल्ट्रासोनिक ध्वनियों का उत्सर्जन करके शिकार करती हैं, जो मछली और अन्य शिकार से टकराती हैं, जिससे वे अपने दिमाग में एक छवि देख पाते हैं। वे अक्सर अकेले या छोटे समूहों में पाए जाते हैं, और आम तौर पर एक माँ और बछड़ा एक साथ यात्रा करते हैं। बछड़े जन्म के समय चॉकलेट ब्राउन रंग के होते हैं और फिर वयस्क होने पर इनकी त्वचा चिकनी बाल रहित भूरे रंग की होती है। मादाएँ नर से बड़ी होती हैं और हर दो से तीन साल में एक बार केवल एक बछड़े को जन्म देती हैं।

असम की पुरानी पीढ़ियों के अनुसार, गंगा डॉल्फिन दो दशकों से पहले ब्रह्मपुत्र नदी तंत्रों में आमतौर पर देखे जाने वाले जलीय मेगा-जीवों में से एक थी। तथापि, बढ़ते मानवजनित दबावों के कारण प्रजातियों की समग्र संख्या में इस प्रकार से गिरावट आ रही है कि वर्तमान में ब्रह्मपुत्र की अधिकांश प्रमुख सहायक नदियाँ डॉल्फिन की संख्या से रहित हैं और यहाँ तक कि ब्रह्मपुत्र नदी में भी प्रजातियाँ केवल कुछ पॉकेटों में ही पाई जाती हैं। इसलिए, इस गंभीर स्थिति में क्षेत्र के सभी संबंधित हितधारकों के सहयोग से प्रजातियों के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए व्यापक प्रयास करना बेहद आवश्यक है। □

स्कैम और हम



श्री अश्विनी कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत अपनी विशाल जनसंख्या और विविध सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य के साथ, स्कैमर के लिए एक उपजाऊ जमीन बन गया है। अभी कुछ समय पहले मुझे मेरे दोस्त का कॉल आया, उसने मुझसे कहा कि "मुझे तीस हजार रुपये की जरूरत है। क्या तू मुझे थोड़े समय के लिए दे सकता है?" मैंने कहा "अभी मेरे पास नहीं है लेकिन तुझे अचानक क्या जरूरत आ पड़ी?" पहले तो वो मुझे बता नहीं रहा था लेकिन मेरे बहुत पूछने पर उसने मुझे अपनी समस्या बताई और उसने मुझे बताया कि वो फेडेक्स से किसी ने उसके नाम गैरकानूनी वस्तुएँ दूसरे देश भेजी हैं और वो अब कस्टम ऑफिसर के संरक्षण में है अब मुझसे वो ऑफिसर पैसों की डिमांड कर रहा है। ये सुनते ही मैं समझ गया कि मेरा दोस्त स्कैम में फँस गया है। एक स्कैम जो आज लाखों भारतीयों की बड़ी मुसीबतों में से एक है। मैंने उससे पूरी जानकारी ली और फिर अपने अंकल के पास जाने को कहा जो पुलिस में है। अब उसको मैंने इस स्कैम के बारे में पूरी जानकारी दी। आज हमारे चारों ओर हजारों लाखों स्कैम हो रहे हैं, एक ख़त्म होता है तो दूसरा स्कैम खबरों में आ जाता है।

वैसे तो मुझे इसे स्कैम न कह कर घोटाला या ठगी कहना चाहिए लेकिन मुझे स्कैम ही ज्यादा समकालीन लगा।

लोगों को निशाना बनाने वाले स्कैमों की संख्या और उनमें विविधताओं को कई महत्वपूर्ण कारकों से समझा जा सकता है। इन कारकों को समझने से हम इस समस्या से निपटने के लिए तैयार हो सकते हैं।

स्कैम के प्रमुख कारण

1. जागरूकता की कमी: लोगों का एक बड़ा हिस्सा, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, आम स्कैमों और धोखाधड़ी की प्रथाओं के बारे में जागरूक नहीं हैं। इससे वे स्कैमर के लिए आसान शिकार बन जाते हैं जो उनकी इस कमी का फायदा उठाते हैं।

2. तेजी से डिजिटलाइजेशन: बैंकिंग, खरीदारी और संचार के लिए डिजिटल प्लेटफार्मों की ओर जितनी तेजी से हमने कदम बढ़ाए हैं उतनी ही तेजी से हम इंटरनेट की दुनिया का भयानक चेहरा देख पाने में असफल रहे हैं। बदलाव अच्छा तब माना जाता है जब बदलाव लाने से पहले लोगों को उस बदलाव से होने वाले फायदे और नुकसान के सभी आयामों के बारे में जानकारी दी जाए। यहाँ उपयोगकर्ता डिजिटली साक्षर भी नहीं हैं और यह देखा गया है जो लोग डिजिटल तकनीक में नए हैं, अक्सर वही लोग ऑनलाइन स्कैमों, फिशिंग और अन्य साइबर अपराधों का शिकार हो जाते हैं।

3. आर्थिक असुरक्षा: कई भारतीयों को वित्तीय अवसरों की सख्त जरूरत होती है, जिससे वे जल्दी धन प्राप्त करने के अवसर तलाशने लगते हैं, आसान ऋणों या आकर्षक नौकरी के प्रस्तावों के लिए अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। आर्थिक रूप से हताश व्यक्ति की अक्सर फैसले लेने की क्षमता धूमिल हो जाती है, जिससे गलत फैसले लिए जाते हैं।

4. ऑथोरिटी पर विश्वास: भारतीय संस्कृति में ऑथोरिटी के आंकड़ों में उच्च स्तर का सम्मान और विश्वास होता है। स्कैमर अक्सर बैंकों, सरकारी विभागों या प्रतिष्ठित

कंपनियों के अधिकारियों के रूप में आ कर अपने शिकारों का विश्वास जीतते हैं।

5. पर्याप्त कानूनों का ठीक तरह लागू न होना : धोखाधड़ी और साइबर अपराधों के खिलाफ कड़े कानूनों के बावजूद, इनका लागू होना सही से नहीं हो पता है। कानूनी कार्यवाही अक्सर धीमी होती है, और स्कैमरों को तत्काल परिणामों का सामना करने की संभावना कम होती है, जिससे उन्हें अपना काम बिना किसी भय के करने का हौसला मिलता रहता है।

6. स्कैमरों की तकनीकी परिष्कार: लोगों को धोखा देने में स्कैमर ठग और उन्नत तकनीक और मनोवैज्ञानिक युक्तियों से परिपूर्ण हो गए हैं। परिष्कृत हो गए हैं, उन्नत तकनीक और मनोवैज्ञानिक युक्तियों का उपयोग करके लोगों को धोखा देने में, डीपफेक वीडियो से लेकर विश्वसनीय फिशिंग ईमेल तक, उनके तरीके लगातार विकसित हो रहे हैं।

7. तर्कवादी समझ का कम होना : अक्सर लोग, किसी धर्मगुरु, अपने किसी रिश्तेदार जो उनसे उम्र में बड़ा होता है या कोई और व्यक्ति जो उन्हें प्रभावित करता है, उनके द्वारा दी गयी सारी जानकारी या सलाह को बिना किसी जाँच के मान लेते हैं जैसे उनको अपना पैसा कहाँ निवेश करना है आदि। वो उनसे सवाल भी नहीं करते हैं।

स्कैम से बचने के उपाय

1. सार्वजनिक जागरूकता अभियान: सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को लोगों को आम स्कैमों और उनसे बचने के तरीकों के बारे में जागरूक करने के लिए निरंतर अभियान चलाना चाहिए। जानकारी विभिन्न माध्यमों, जैसे टेलीविजन, रेडियो और सोशल मीडिया के माध्यम से दी जानी चाहिए।

2. डिजिटल साक्षरता में सुधार: विशेष रूप से वृद्ध और गाँव की आबादी के बीच डिजिटल साक्षरता में सुधार के लिए पहल आवश्यक है। कार्यशालाओं, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, नुक्कड़ नाटकों और सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को डिजिटल सुरक्षा की मूल बातें समझने में मदद की जानी चाहिए।

3. कानूनी ढाँचे को मजबूत करना: कानूनी प्रणाली को

स्कैम से संबंधित शिकायतों के प्रति अधिक फुर्तीला और उत्तरदायी होना चाहिए। इन मामलों को तेजी से निपटाना और अपराधियों के लिए कड़ी सजा सुनिश्चित करना एक निवारक के रूप में कार्य कर सकता है।

4. नौकरशाही प्रक्रियाओं को सरल बनाना: सरकारी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित और सुगम करना और उन्हें अधिक पारदर्शी बनाना, स्कैमरों के लिए लोगों का फायदा उठाना मुश्किल बना सकता है। सरकारी सेवाओं के लिए अधिक यूजर-फ्रेंडली और सुरक्षित ऑनलाइन पोर्टल्स को लागू करने से मदद मिल सकती है।

5. वित्तीय शिक्षा को बढ़ावा देना: वित्तीय शिक्षा को स्कूल पाठ्यक्रमों और सामुदायिक कार्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिए। लोगों को व्यक्तिगत वित्त की मूल बातें, जल्दी अमीर बनाने वाली योजनाओं के जोखिम और अपने पैसों के सावधानीपूर्वक निवेश के बारे में पढ़ाया जाना चाहिए।

6. लालच और डर का भाव लाने से बचें: अधिकतर देखा गया है स्कैमर का सबसे बड़ा हथियार आपका लालच और आपका डर होता है। पहले वो आपको लालच देगा वो किसी भी वस्तु का लालच हो सकता है जैसे पैसा, लैपटॉप या कोई व्यक्ति भी हो सकता है। स्कैमर को मैसेज से आपके लालच के बारे में पता चलता है, तो वो आपसे कुछ ऐसा करने को कहता है जो नैतिक कार्य नहीं होता और एक बार आपने वो किया, फिर वो आपको डराता है। इसलिए जितना संभव हो, डर और लालच से दूर रहना चाहिए।

स्कैम की लम्बी-चौड़ी समस्या एक बहुआयामी समस्या है जिसे हल करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जन जागरूकता बढ़ा कर, डिजिटल साक्षरता में सुधार करके, कानूनी ढाँचों को मजबूत करके, वित्तीय शिक्षा को बढ़ावा दे कर और सुरक्षित ऑनलाइन पोर्टल को प्रोत्साहित करके, हम अपने लोगों को धोखाधड़ी का शिकार होने से बचा सकते हैं। जागरूकता और सतर्कता हमारे इन स्कैम के खिलाफ सबसे अच्छे बचाव हैं, और एक समाज के रूप में, हमें सभी के लिए एक सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए मिल कर काम करना होगा। □

कुंभ मेला: आस्था, संस्कृति और आधुनिक परिप्रेक्ष्य



श्री गिरिजेश पाण्डेय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



भूमिका

कुंभ मेला, भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण और पवित्र हिस्सा है, जिसे दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक सम्मेलनों में से एक माना जाता है। यह आयोजन न केवल धार्मिक आस्था और श्रद्धा का प्रतीक है, बल्कि यह भारतीय समाज और संस्कृति की अद्वितीय समृद्ध विविधता को भी प्रदर्शित करता है। कुंभ मेला सदियों से भारतीय परंपराओं और आध्यात्मिकता का एक महत्वपूर्ण स्तंभ रहा है, जहाँ लाखों श्रद्धालु एकत्रित होते हैं।

इस मेले में विभिन्न संप्रदायों, परंपराओं, और आस्थाओं का संगम होता है, जो इसे एक समावेशी और विविधतापूर्ण आयोजन बनाता है। यह मेला भारत के चार प्रमुख स्थानों—प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक—पर हर 12 वर्षों में आयोजित होता है, जहाँ करोड़ों श्रद्धालु गंगा, यमुना, क्षिप्रा और गोदावरी नदियों में डुबकी लगाने के लिए एकत्र होते हैं।

कुंभ मेले का इतिहास

कुंभ मेले का इतिहास पौराणिक कथाओं, धार्मिक मान्यताओं, और ऐतिहासिक घटनाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस मेले की उत्पत्ति भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में रची-बसी है, और इसका इतिहास सदियों पुराना है। कुंभ मेले की शुरुआत कब और कैसे हुई, इसके बारे में विभिन्न धारणाएँ और कहानियाँ हैं, लेकिन यह स्पष्ट है कि यह मेला भारतीय सभ्यता के प्रारंभिक समय से ही महत्वपूर्ण रहा है।

पौराणिक उत्पत्ति

कुंभ मेले की सबसे प्रमुख पौराणिक कथा समुद्र मंथन से जुड़ी है। यह कथा हिंदू धर्म के पुराणों में वर्णित है और इसके अनुसार, देवताओं और असुरों के बीच अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र मंथन हुआ था। इस मंथन के दौरान अमृत का एक कुंभ (कलश) निकला, जिसे देवताओं ने असुरों से बचाने के लिए ले लिया। अमृत कलश को लेकर देवताओं

और असुरों के बीच बारह दिनों और रातों तक संघर्ष हुआ, जो पृथ्वी पर बारह वर्षों के बराबर माना जाता है। इस संघर्ष के दौरान अमृत की कुछ बूँदें पृथ्वी पर चार स्थानों पर गिरीं—प्रयागराज (इलाहाबाद), हरिद्वार, उज्जैन, और नासिक। ये स्थान आज के कुंभ मेलों के आयोजन स्थल हैं।

इन चार स्थानों को पवित्र माना जाता है और ऐसा माना जाता है कि कुंभ मेले के दौरान यहाँ स्नान करने से व्यक्ति के सारे पाप धुल जाते हैं और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस प्रकार, कुंभ मेला भारतीय धर्म और आस्था का एक महत्वपूर्ण आयोजन बन गया है, जो हर 12 वर्षों में इन चार स्थानों पर बारी-बारी से आयोजित होता है।

ऐतिहासिक विकास

कुंभ मेले का पहला ऐतिहासिक उल्लेख 7वीं शताब्दी में मिलता है, जब चीनी यात्री ह्वेनसांग ने प्रयागराज में आयोजित एक मेले का वर्णन किया। ह्वेनसांग के अनुसार, यह मेला इतना विशाल था कि इसमें लाखों श्रद्धालु एकत्रित होते थे। हालाँकि ह्वेनसांग ने इस मेले को कुंभ मेला के नाम से उल्लेखित नहीं किया, लेकिन इतिहासकार इसे कुंभ मेले का प्रारंभिक रूप मानते हैं।

8वीं शताब्दी में, आदि शंकराचार्य ने कुंभ मेले को पुनर्जीवित किया और इसे हिंदू धर्म के चार प्रमुख मठों (चारधाम) के साथ जोड़ा। आदि शंकराचार्य ने सनातन धर्म की पुनःस्थापना के लिए चार मठों की स्थापना की थी—उत्तर में बद्रीनाथ, पूर्व में जगन्नाथ पुरी, पश्चिम में द्वारका, और दक्षिण में रामेश्वरम। उन्होंने कुंभ मेले को एक ऐसा मंच बनाया जहाँ देश भर से साधु-संत और धार्मिक विचारक एकत्रित होकर धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर चर्चा करते थे। यह आयोजन धीरे-धीरे पूरे भारत में लोकप्रिय हो गया और एक विशाल धार्मिक मेले के रूप में विकसित हुआ।

मध्यकालीन और आधुनिक युग

मध्यकालीन भारत में कुंभ मेला एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन बन चुका था। मुगल काल के

दौरान भी इस मेले की महत्ता बनी रही, और मुगल सम्राटों ने इस आयोजन को संरक्षण दिया। उदाहरण के लिए, अकबर ने प्रयागराज को अपने साम्राज्य का प्रमुख केंद्र बनाया और यहाँ कुंभ मेले के दौरान श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा के लिए विशेष व्यवस्थाएँ कीं।

ब्रिटिश शासन के दौरान कुंभ मेला और भी लोकप्रिय हुआ। ब्रिटिश प्रशासन ने इस मेले के आयोजन को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए विशेष नियम और कानून बनाए। 19वीं शताब्दी में प्रयागराज में आयोजित कुंभ मेला विशेष रूप से महत्वपूर्ण था, क्योंकि इस समय इस मेले में देशभर से श्रद्धालुओं का विशाल जनसमूह एकत्रित हुआ। ब्रिटिश शासन ने इस मेले को व्यवस्थित रूप से संचालित करने के लिए व्यापक योजनाएँ बनाई, जिसमें भीड़ प्रबंधन, स्वास्थ्य सेवाएँ, और सफाई व्यवस्था शामिल थी।

स्वतंत्रता के बाद का कुंभ मेला

भारत के स्वतंत्रता के बाद, कुंभ मेला राष्ट्रीय धरोहर के रूप में और भी महत्वपूर्ण हो गया। स्वतंत्र भारत में कुंभ मेले का आयोजन और भी बड़े स्तर पर होने लगा। 1989 में हरिद्वार में आयोजित कुंभ मेला और 2001 में प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ मेला विशेष रूप से महत्वपूर्ण थे, क्योंकि इन आयोजनों में करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

वर्तमान समय में, कुंभ मेला भारतीय संस्कृति, धर्म, और समाज का एक महत्वपूर्ण प्रतीक बन चुका है। यह न केवल भारत के भीतर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन के रूप में पहचाना जाता है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) ने भी कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया है।

कुंभ मेले का महत्व

कुंभ मेला भारतीय संस्कृति, धर्म, और समाज का एक महत्वपूर्ण और पवित्र आयोजन है, जिसका महत्व केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक,

आर्थिक, और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी बहुत बड़ा है। यह मेला एक ऐसा अवसर है, जहाँ करोड़ों लोग एकत्रित होकर अपनी आस्था, संस्कृति, और जीवन की मूल्यों का प्रदर्शन करते हैं। कुंभ मेले के विभिन्न महत्व इस प्रकार हैं :

1. धार्मिक महत्व

कुंभ मेले का सबसे प्रमुख महत्व इसका धार्मिक पक्ष है। यह मेला हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थयात्रा है, जहाँ वे गंगा, यमुना, क्षिप्रा, और गोदावरी जैसी पवित्र नदियों में स्नान करके अपने पापों से मुक्ति पाने और मोक्ष की प्राप्ति की आशा करते हैं। हिंदू मान्यताओं के अनुसार, कुंभ मेले के दौरान इन नदियों में स्नान करने से व्यक्ति के जीवन के सभी पाप धुल जाते हैं और उसे मोक्ष प्राप्त होता है। यह समय और स्थान विशेष रूप से पवित्र माने जाते हैं क्योंकि इन स्थानों पर अमृत की बूंदें गिरी थीं, जो अमरत्व का प्रतीक हैं।

2. आध्यात्मिक महत्व

कुंभ मेला केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक गहरे आध्यात्मिक अनुभव का भी अवसर प्रदान करता है। मेले में साधु-संतों, योगियों, और धार्मिक गुरुओं की उपस्थिति इस आयोजन को एक अद्वितीय आध्यात्मिक मंच बनाती है। श्रद्धालु यहाँ आकर न केवल धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं, बल्कि वे आध्यात्मिक ज्ञान और मार्गदर्शन की खोज भी करते हैं। यहाँ विभिन्न आध्यात्मिक और धार्मिक प्रवचन, सत्संग, और ध्यान शिविर आयोजित किए जाते हैं, जो श्रद्धालुओं को अपने जीवन के उद्देश्य और सत्य की खोज में मदद करते हैं।

3. सांस्कृतिक महत्व

कुंभ मेला भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि का प्रतीक है। इस मेले में विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं, और संस्कृतियों के लोग एकत्रित होते हैं, जो भारतीय समाज की विविधता को प्रदर्शित करता है। यहाँ विभिन्न सांस्कृतिक

कार्यक्रम, जैसे संगीत, नृत्य, और नाटकों का आयोजन किया जाता है, जो भारतीय कला और संस्कृति की धरोहर को संजोने और आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं। कुंभ मेला भारतीय लोक कला, शिल्प, और साहित्य के संरक्षण और प्रचार का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

4. आर्थिक महत्व

कुंभ मेला का आर्थिक महत्व भी कम नहीं है। इस मेले में करोड़ों की संख्या में लोग भाग लेते हैं, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा योगदान होता है। मेले के दौरान होटल, भोजन, परिवहन, और अन्य सेवाओं की मांग बढ़ जाती है, जिससे स्थानीय व्यापारियों और सेवा प्रदाताओं को लाभ होता है। इसके अलावा, कुंभ मेला पर्यटन को बढ़ावा देता है, जिससे स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भी फायदा होता है। केंद्र और राज्य सरकारें भी कुंभ मेले के दौरान बड़े पैमाने पर निवेश करती हैं, जिससे स्थानीय अवसंरचना का विकास होता है।

5. वैज्ञानिक और पर्यावरणीय महत्व

हाल के वर्षों में कुंभ मेला का पर्यावरणीय और वैज्ञानिक महत्व भी सामने आया है। इस विशाल आयोजन के दौरान जल प्रबंधन, स्वच्छता, और अपशिष्ट प्रबंधन जैसे मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आधुनिक तकनीकों और वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करके मेले के दौरान पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया जाता है। इसके अलावा, कुंभ मेला विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधानों का भी केंद्र बनता है, जहाँ समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, और पर्यावरण विज्ञान के विशेषज्ञ इस आयोजन से संबंधित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करते हैं।

6. राजनीतिक और राष्ट्रीय महत्व

कुंभ मेला में विभिन्ना राजनीतिक नेता, धर्मगुरु, और सामाजिक कार्यकर्ता भाग लेते हैं, जो इसे एक प्रमुख राजनीतिक मंच भी बनाता है। यह आयोजन भारतीय समाज

के विभिन्न वर्गों को एकजुट करने और उन्हें एक साझा राष्ट्रीय पहचान के रूप में स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

7. अंतरराष्ट्रीय महत्व

कुंभ मेला दुनिया के कोने-कोने से श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करता है, जिससे यह एक वैश्विक सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजन बन चुका है। कुंभ मेला भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण मंच है, जिससे भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का वैश्विक प्रसार होता है।

8. मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक महत्व

कुंभ मेला श्रद्धालुओं के लिए एक आध्यात्मिक और भावनात्मक पुनरुद्धार का अवसर होता है। लाखों लोग यहाँ आ कर अपने जीवन के तनाव, चिंता, और दुःखों से मुक्ति पाने का प्रयास करते हैं। यहाँ का वातावरण, जो पूरी तरह से भक्ति, आस्था, और समर्पण से भरा होता है, लोगों को मानसिक शांति और संतोष का अनुभव कराता है। यह मेला लोगों को अपनी आंतरिक आत्मा से जुड़ने और जीवन के गहरे अर्थ की खोज करने का अवसर प्रदान करता है।

आगामी कुंभ मेला 2025 : प्रयागराज

प्रयागराज, जिसे पहले इलाहाबाद के नाम से जाना जाता था, एक ऐतिहासिक और पवित्र स्थान है, जहाँ गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों का संगम होता है। यह संगम स्थल हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र माना जाता है, और यहाँ पर हर 12 वर्षों में कुंभ मेले का आयोजन होता है। आगामी कुंभ मेला 2025 में प्रयागराज में आयोजित होने जा रहा है, और इसके लिए तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही हैं।

सरकार और स्थानीय प्रशासन ने इस बार के मेले को और भी व्यापक और सुव्यवस्थित बनाने के लिए कई योजनाएँ बनाई हैं। इन तैयारियों में प्रमुख रूप से निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दिया जा रहा है:

- ♦ **आवागमन और परिवहन:** प्रयागराज में मेले के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ होती है, इसलिए परिवहन व्यवस्था को सुधारने के लिए विशेष योजनाएँ बनाई जा रही हैं। रेलवे, हवाई अड्डा, और सड़कों का विकास और विस्तार किया जा रहा है, ताकि श्रद्धालुओं को आसानी से और सुरक्षित रूप से मेले में पहुंचने की सुविधा मिल सके।
- ♦ **स्वास्थ्य सेवाएँ:** कुंभ मेले के दौरान लाखों लोग एकत्रित होते हैं, इसलिए स्वास्थ्य सेवाओं को सुनिश्चित करने के लिए विशेष इंतजाम किए जा रहे हैं। मेले के दौरान चिकित्सा शिविर, मोबाइल अस्पताल, और आपातकालीन सेवाएँ तैनात की जाएँगी, ताकि किसी भी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का तुरंत समाधान किया जा सके।
- ♦ **सुरक्षा:** सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जाएगा। सीसीटीवी कैमरों का व्यापक नेटवर्क, ड्रोन निगरानी, और सुरक्षाबलों की तैनाती सुनिश्चित की जा रही है, ताकि मेले में किसी भी प्रकार की असुरक्षा या अव्यवस्था न हो।
- ♦ **स्वच्छता और सफाई:** मेले के दौरान सफाई व्यवस्था को बनाए रखने के लिए विशेष प्रबंध किए जा रहे हैं। स्वच्छता कर्मियों की तैनाती, कूड़ा प्रबंधन की योजनाएँ, और पवित्र नदियों के जल को स्वच्छ बनाए रखने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।
- ♦ **आवास और सुविधाएँ:** लाखों श्रद्धालुओं के आवास के लिए अस्थायी टेंट शहर, धर्मशालाएँ, और होटल विकसित किए जा रहे हैं। मेले के दौरान बिजली, पानी, और शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था की जाएगी, ताकि श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।
- ♦ **डिजिटल और ऑनलाइन सेवाएँ:** इस बार के कुंभ मेले में डिजिटल तकनीकों का व्यापक उपयोग किया जाएगा।

श्रद्धालुओं के लिए ऑनलाइन पंजीकरण, डिजिटल मैप्स, और मोबाइल एप्स की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी, जिससे मेले की जानकारी और सेवाओं तक आसानी से पहुंचा जा सके।

चुनौतियाँ और समाधान

कुंभ मेला 2025 का आयोजन बहुत बड़ी चुनौती है, क्योंकि यह दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक है। यहाँ लाखों की संख्या में लोग एकत्रित होते हैं, जिससे भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा, और स्वच्छता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा रहे हैं:

प्रभावी भीड़ प्रबंधन: भीड़ को नियंत्रित करने के लिए एडवांस प्लानिंग, वर्चुअल और फिजिकल बैरिकेडिंग, तथा सिग्नल सिस्टम का उपयोग किया जा रहा है। डिजिटल टिकटिंग और मोबाइल एप्स के माध्यम से भीड़ के आवागमन पर नजर रखी जा सकती है।

♦ **स्वास्थ्य और स्वच्छता सुविधाएँ:** मोबाइल क्लीनिक, एम्बुलेंस, और अस्थायी स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना की गयी है। साथ ही, शौचालय और स्वच्छता सुविधाओं को नियमित रूप से साफ और मेंटेन किया जाता है।

♦ **आवागमन और यातायात नियंत्रण:** ट्रैफिक को सुचारू रखने के लिए वन-वे ट्रैफिक और सार्वजनिक परिवहन के विशेष मार्गों का उपयोग किया जा रहा है। यात्री मार्गों की जानकारी देने के लिए डिजिटल साइनेज का भी उपयोग किया जा रहा है।

♦ **सुरक्षा प्रबंधन:** सीसीटीवी, ड्रोन, और अन्य निगरानी उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है। पुलिस और सुरक्षा बलों की भारी तैनाती के साथ साथ यात्रियों को सतर्क करने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं।

निष्कर्ष

कुंभ मेला भारतीय संस्कृति, धर्म, और समाज का एक अद्वितीय और विशाल आयोजन है, जो सदियों से लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र रहा है। यह मेला न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसका सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, और आध्यात्मिक प्रभाव भी गहरा है। कुंभ मेला भारतीय समाज की विविधता, एकता, और सहिष्णुता का प्रतीक है, जहाँ विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों, और संस्कृतियों के लोग एक साथ आकर अपनी आस्था और परंपराओं का प्रदर्शन करते हैं।

प्रयागराज में आयोजित होने वाला कुंभ मेला- 2025 इस परंपरा को आगे बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण अवसर होगा। इस आयोजन के माध्यम से न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का प्रयास किया जा रहा है, बल्कि इसे वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का भी एक उत्कृष्ट अवसर है।

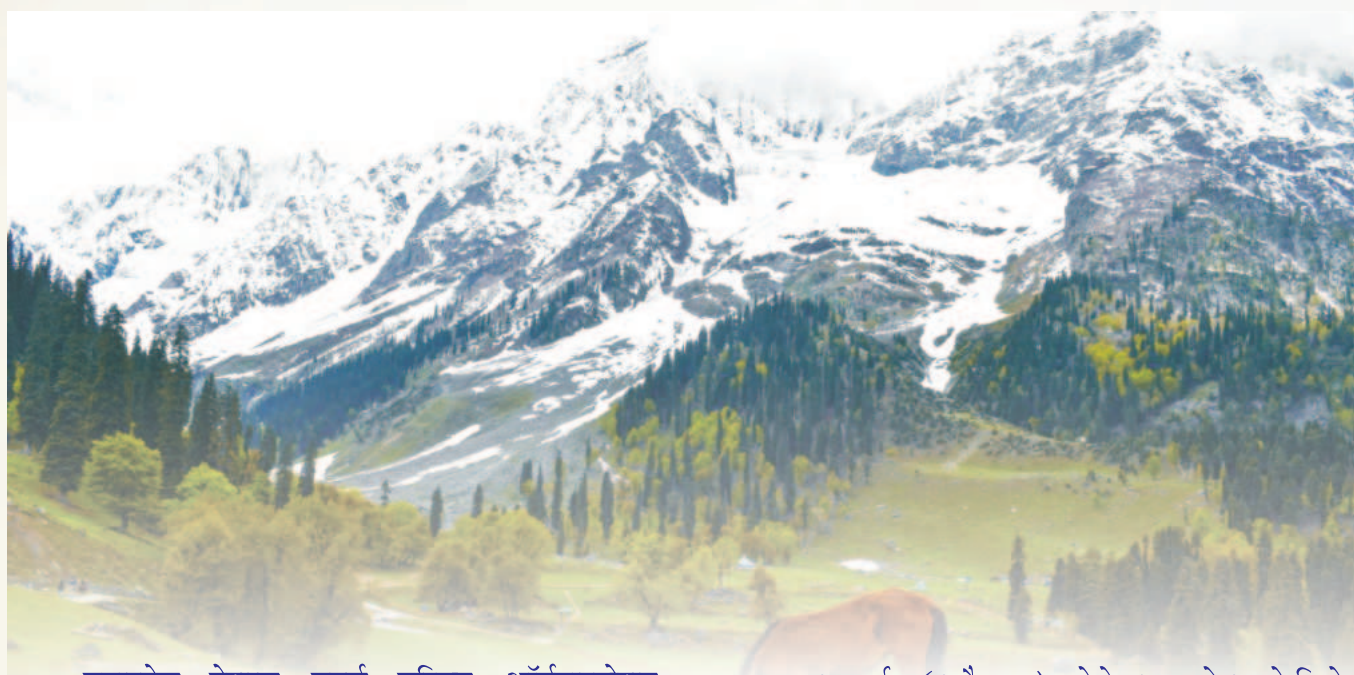
कुंभ मेला केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि भारतीय समाज और संस्कृति की जीवंतता का एक ऐसा प्रतीक है, जो देश की सांस्कृतिक धरोहर को अनंतकाल तक संजोने और आगे बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा। □

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी। - सी. राजगोपालाचारी

पर्यटन के क्षेत्र में संभावनाएँ



श्री अभिनव कुमार
कनिष्ठ अनुवादक



यूनाइटेड नेशन्स वर्ल्ड टूरिज़्म ऑर्गनाइजेशन (यूएनडबल्यूटीओ) की परिभाषा के अनुसार किसी भी व्यक्ति/समूह का, गैर-अर्जन उद्देश्य से, न्यूनतम 24 घंटे एवं अधिकतम एक वर्ष के लिए, अपने मूल निवास स्थल से दूर किसी अन्य स्थान पर जाकर मनोरंजन के लिए घूमना पर्यटन कहलाता है। पर्यटन एक बहुआयामी आर्थिक क्षेत्र है। सरल शब्दों में, पर्यटन-उत्पाद को कई सेवा-क्षेत्रों के सेवाओं के मेल से बने पैकेज के रूप में समझा जा सकता है। पर्यटन उत्पाद के मूलतः 5 तत्व होते हैं, जिन्हें “5 ए ऑफ टूरिज़्म” कहा जाता है, वे हैं:

- **आकर्षण (अट्रैक्शन)** : ऐसे स्थल जो अपने विशेष महत्व के कारण पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। ये हैं – ऐतिहासिक इमारत, विश्व धरोहर स्थल, वन्य क्षेत्र, धार्मिक स्थल, युद्ध स्थल, ग्रामीण क्षेत्र, जनजातीय क्षेत्र, आदि।
- **अभिगम्यता (एक्सेसिबिलिटी)** : इसका तात्पर्य पर्यटकों के प्रमुख यातायात साधनों से है, जो हैं– रेलवे, नागरिक उड्डयन, उच्च राजमार्ग, जलमार्ग, जिनसे वे अपने मूल निवास क्षेत्र से पर्यटन क्षेत्र तक पहुँचते हैं।
- **आवास (एक्कोमोडेशन)** : पर्यटकों की यात्रा अवधि के दौरान, उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले निवास

स्थान, जो हैं- होटल, फ्लोटेल, इन, विला, कॉटेज आदि।

- **आनुषंगिक सेवाएँ (एंसिलरी सर्विसेज़) :** पर्यटकों की सुविधा के लिए मुख्यतः ट्रेवल एजेंसि या टूर ऑपरेशन कंपनी द्वारा पैकेज में शामिल कैब, साइट सीइंग, गाइड आदि सेवाएँ आनुषंगिक सेवा के अंतर्गत आती हैं।

- **क्रियाकलाप (एक्टिविटी) :** पर्यटन स्थल पर पर्यटकों द्वारा किए जाने वाले क्रियाकलाप जैसे- फोटोग्राफी, सफारी, नौका विहार, एडवेंचरस क्रियाकलाप आदि।

भारत जैसे विकासशील देश में पर्यटन की भूमिका और भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। कोविड से पूर्व भारत की जीडीपी में जहां पर्यटन का योगदान 7 प्रतिशत से ज्यादा था, पिछले कुछ वित्तीय वर्षों में महज 4-6 प्रतिशत है। विश्व के अन्य देशों के जीडीपी में पर्यटन के योगदान के अनुपात को देखकर हम पाते हैं कि भारत में पर्यटन को प्राथमिकता की सूची में रखते हुए एक आर्थिक क्षेत्र के रूप में उसका विकास करने की अपार संभावनाएँ हैं। पर्यटन का विकास भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए इसलिए आवश्यक है, क्योंकि देश में विविधता के कारण कई प्रकार के पर्यटन विकल्पों को तराशा जा सकता है, जिससे ना सिर्फ देश में रोजगार के अवसर खुलेंगे बल्कि यह एक बढ़ते हुए उद्योग के तौर पर विदेशी निवेशों को भी अपनी ओर खींचेगा। यदि हम विदेशी पर्यटकों के आगमन की संख्या में इजाफा करने का प्रयास करें तो देश के पास विदेशी मुद्रा का रिजर्व बढ़ेगा, जो हमारे देश की अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक होगा।

भारत भौगोलिक दृष्टि से समृद्ध विविधताओं की भूमि है। यहाँ के वन, पर्वत, तीर्थ स्थल, नदी, समुद्र के तट, रेगिस्तान आदि प्राकृतिक सौंदर्य को अपने अंदर समेटे हुए हैं। बड़े शहर एवं मुख्य पर्यटन स्थल वृहत पैमाने पर पर्यटन का लाभ उठा रहे हैं। हमें पर्यटन के नए आयामों को विकसित

करने की आवश्यकता है, जिससे दूरवर्ती इलाकों में भी पर्यटन को फैलाया जा सके। ऐसे में ग्रामीण पर्यटन (रूरल टूरिज्म) एक महत्वपूर्ण पहलू है। देश के कई गाँव जैसे- होडका (कच्छ, गुजरात), माना (चमोली, उत्तराखंड), स्पीति (हिमाचल प्रदेश) ग्रामीण पर्यटन के सफल उदाहरण के रूप में ऊभर चुके हैं। इनके तर्ज पर देश के अन्य राज्यों के सुदूर गाँवों की विशेषता को प्रचारित-प्रसारित करके एवं बुनियादी पर्यटन सेवाएँ उपलब्ध कराकर उन्हें भी ग्रामीण पर्यटन की कड़ी से जोड़ा जा सकता है। इससे ग्रामीणों को आजीविका के निरंतर अवसर मिलेंगे, जिससे शहरों की ओर पलायन कम होगा। मूलभूत प्रशिक्षण के द्वारा ही ग्रामीण महिलाएँ एवं कम पढ़े-लिखे युवा भी अपने हुनर को तराशकर सम्मानजनक आजीविका से जुड़ सकेंगे। ग्रामीण भारत में आर्थिक क्रियाकलाप को गति मिलेगी और गाँव सशक्त बनेंगे।

वनों में निवास करने वाले जनजातीय समुदाय भी अपनी सभ्यता-संस्कृति को प्रदर्शित करने के लिए पर्यटन से जुड़ सकते हैं। न्यूजीलैंड के माओरी और केन्या-तंजानिया के मसाई जनजाति को आज कौन नहीं जनता है? पूरी दुनिया के पर्यटक उनकी संस्कृति से रूबरू होने के लिए जाते हैं। ट्राइबल/एथनिक टूरिज्म की इस अवधारणा को विकसित करके हम अपने देश के जनजातीय समूहों को भी पर्यटन के इस आयाम से जोड़ सकते हैं। यह आयाम थोड़ा संवेदनशील होता है, क्योंकि हमें यह सुनिश्चित करना होता है कि प्रदर्शन से जनजाति वर्ग की मूल संस्कृति का हास न हो।

पर्यटन के क्षेत्र में हमें अभी बहुत लंबा सफर तय करना है। केवल सरकारी प्रयास से हम बड़े सपने नहीं देख सकते हैं। पीपीपी मॉडल पर पर्यटक स्थलों एवं इससे जुड़े अन्य सेवा-क्षेत्रों का विकास हो, तो हम जल्द ही इस दिशा में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। □

बेटी बोझ नहीं



श्रीमती नीतू कुमारी

पत्नी - श्री विनोद कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



अंशु अभी बाथरूम से निकली ही थी कि दया की आवाज आई - मैम साहब मैंने झाड़ू-पोछा कर लिया है, आपको देर है तो मैं चाय चढ़ा दूँ ?

अंशु हड़बड़ा कर बोली - “नहीं - नहीं मैं आ गई। तुझे पता तो है कि बाबूजी को मेरे हाथ की चाय पसंद है”, कहते हुए केतली गैस पर चढ़ाते हुए दया को दूसरे काम समझाने लगती है।

अंशु की शादी को एक वर्ष हो चुका है, सभी घरवाले उसे बहुत प्यार करते हैं खासकर उसका पति राकेश। अंशु ने कभी किसी को शिकायत का मौका नहीं दिया। अंशु ने लॉ की पढ़ाई की थी, लेकिन ससुराल वालों को उसका घर के बाहर काम करना पसंद नहीं था इसलिए अपना कैरियर नहीं बनाया। उसने खुद को घर के अनुसार ढाल लिया। अंशु पढ़ी-लिखी, संस्कारी, घर के कार्यों में दक्ष और खुशमिजाज लड़की थी। सासु माँ भी उसे खूब लाड लगाती। हाँ, ये बात और है कि उसकी तारीफ करते-करते वो उसकी जेठानी को ताने मारना

नहीं भूलती थी। अंशु ने कभी राकेश से भाभी के बारे में बात करने की कोशिश तो की पर राकेश ने कभी ठीक से जवाब नहीं दिया। वो जब पहली बार ससुराल आई थी तो भाभी से मिली थी, उसे तो भाभी बहुत अच्छी और मिलनसार लगी थी, लेकिन जब पगफेरे के बाद वापस आई तो वह अपने मायके जा चुकी थी। सासुमाँ ने बताया - उसकी तबियत ठीक नहीं रहती थी, हमेशा मायके ही जाना चाहती थी, सो जाने दिया।

अंशु को इतने बड़े घर में बिल्कुल मन नहीं लगता था। कहने को तो घर में पाँच लोग - सास, ससुर, जेठ, राकेश और अंशु थे लेकिन दिन में वो अकेली रहती। सभी कुछ-ना-कुछ काम से बाहर ही रहते। सासुमाँ अक्सर सत्संग और पूजा-पाठ में, ससुर जी समाज-सेवा में, राकेश और भैया ऑफिस में। अंशु के लिए वक्त काटना बहुत मुश्किल हो जाता, वो इंतजार करती कब शाम होगी, सभी आएँगे और घर में रौनक होगी। उसका दिल करता वो भैया को बोले कि भाभी को मायके से ले आइए, मैं उनका ख्याल रख लूँगी पर अंशु ने देखा था कि भाभी का नाम लेते ही सासुमाँ नाराज हो जाती है इसलिए वो चुप रह जाती है। ऐसे भी अंशु को भाभी से ज्यादा भाभी की बेटी गुड्डि से मिलने की चाहत थी। शादी के बाद जब पूरा परिवार उसके लिए नया था तब एक गुड्डि ही थी जो चाची-चाची कहते हुए उससे लिपटी रहती थी पर उसने महसूस किया था कि राकेश और माँ जी उसे ज्यादा पसंद नहीं करते थे, शायद भाभी के कारण।

एक सुबह जब अंशु किचन में काम कर रही थी कि अचानक मुँह पर हाथ रखकर बाथरूम भागी, दया को फिक्र हुई – वो भी-क्या हुआ मैम साहब ? बोलते हुए पीछे दौड़ी तो देखा कि अंशु को उल्टियाँ हो रही हैं। बस क्या था, दौड़ कर पूरे घर में बता आई और राकेश से बोली इस बार तो मैं सोने की बालियाँ लूँगी, पिछली बार आपने कुछ नहीं दिया था। राकेश कुछ समझ पाते उससे पहले खुद ही बोल पड़ी छोटी बहु के पैर भारी हैं, वो उम्मीद से है। सासुमाँ ने सुना तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना ना था। उन्होंने अंशु से पूछा बहु क्या ये सच है। अंशु ने मुस्कुरा कर सर झुका लिया। उनकी अनुभवी आँखें समझ गई। उसने दया से कहा – हाँ हाँ ले लेना, पहले हमारा वारिस आने तो दो। तभी उनके चेहरे के भाव बदल से गए, उन्होंने थोड़ी रुखाई से राकेश से कहा – बेटा, बहु को आज ही अपने फ़ैमिली डॉक्टर के पास जाकर चेक-अप करवा ला, सब ठीक रहा तो मैं पूरे मुहल्ले में मिठाई बाटूँगी। राकेश ने कहा – हाँ माँ, आज शाम को ऑफिस से आकर ले जाता हूँ। अंशु ने कहना चाहा कि वो ठीक है मगर घरवाले उससे कितना प्यार करते हैं, सोचकर मुस्कुरा कर रह गई।

आज सारा दिन जाने वो किस दुनिया में रही, कब शाम हुई कुछ पता ना चला। माँ बनने के एहसास में एक अलग ही आनंद होता है, वो ये महसूस कर पा रही थी। जब शाम को राकेश आए तो दोनों तैयार होकर डॉक्टर के पास गए। लेडी डॉक्टर ने अच्छे से अंशु का चेक-अप किया और फिर अंशु को बाहर भेजकर राकेश को कुछ बताने लगी। अंशु बाहर बैठे-बैठे, छोटे-छोटे बच्चों के पोस्टर को जो दीवार पर लगे थे, देखकर खुश होती रही कि ऐसा ही नन्हा मेहमान उसके घर भी आने वाला है। थोड़ी देर में राकेश बाहर आ गए तो अंशु ने पूछा “क्या हुआ” तो राकेश “कुछ नहीं” कहकर आगे बढ़ गया। अंशु ने राकेश को मिठाई के लिए बोल तो वह बोला – “रात हो गई है, दूसरे दिन ले लेंगे।” अंशु ने महसूस किया कि राकेश कुछ उदास है लेकिन वो फिर अपनी खुशी को किसी

बात से कम नहीं करना चाहती थी इसलिए चुप रहकर रास्ते को इन्जॉय करने लगी।

घर पहुँचते ही सासुमाँ ने पूछा, “क्या कहा डॉक्टर ने?”, ससुर जी, भैया सभी वहीं थे, सबकी आँखों में यही सवाल था। राकेश ने कहा – डॉक्टर ने अगले रविवार को बुलाया है। ये सुनकर सबके चेहरे उतर गए। सभी अपने कमरे में चले गए तो अंशु ने पूछा, “मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ तो डॉक्टर ने क्यों बुलाया है?” अंशु ने कई बार पूछा तो राकेश ने कहा ये लड़की है, हमें लड़का चाहिए कहकर पलटकर सो गया। अंशु समझ नहीं पा रही थी कि ये क्या कह गए राकेश – लड़का चाहिए मतलब वो रविवार को उसे गर्भपात के लिए लेकर ... सोचकर उसने आँखें मींच ली। नहीं-नहीं मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। मैं अपने बच्चे को दुनिया में लेकर आऊँगी, क्या फ़र्क पड़ता है लड़का हो या लड़की। ये सारी बातें सोचते-सोचते कब सुबह हुई पता ही नहीं चला। सुबह उसने सबसे पहले भाभी के मायके फोन किया और बातों-ही-बातों में उसे पता चला कि ये सब भाभी के साथ भी हो चुका है, तीन गर्भपात के बाद एक बार गलत सूचना की वजह से गुड़ी तो दुनिया में आ गई मगर घरवालों की रुखाई की वजह से मायके में रहती है।

ये सब जानकर अंशु को लगा जैसे वो अब तक किसी सपने की दुनिया में थी, अब जागी है। घरवालों का ये काला चेहरा देख कर उसने अपना एक बैग लिया, उसमें कुछ कपड़े भरे और कैब बुला कर बिना किसी को कुछ बताए निकल गई। उसे ना तो मायके ना किसी ससुराल वाले की जरूरत है, वो अकेली ही अपनी बच्ची के लिए काफी है। आज के जमाने में जहाँ लड़कियाँ चाँद पर जा रही हैं, वहाँ गर्भ में ही उसे मार देना सोचकर ही उसका मन दहल गया। वो अपनी बेटा को एक डॉक्टर बनाएगी और दिखा देगी कि बेटियाँ बोझ नहीं, बल्कि दीपक होती हैं जो दो-दो परिवारों को रौशन करती हैं। □

अभिलाषा



श्री उत्कर्ष भटनागर
लेखापरीक्षक

क्या है यह अभिलाषा ?
यह आशाओं का एक दर्पण है,
जिनमे हम अपेक्षा के स्वप्न सजोते है ।
यह ख्वाबों के अंबर का टूटा अंश,
जो कागज की कश्ती में उतरता है,
हाँ यह अभिलाषा है,
मेरी भी अभिलाषा है ।

अभिलाषा किसी को पाने की,
अभिलाषा कुछ हासिल करने की,
हमारी उम्मीदों का मंदिर है ।
उम्मीद की वह किरण जिसको धुंध में देखा नही जाता,
लेकिन मन की रोशनी का धोखा होता है
जिन्दगी भले आखिरी साँस ही क्यों न ले,
फिर भी बंद आँखों के परदे पर अधूरे भाव होते है ।

चाँद की दूरी का अंदाजा नहीं फिर भी पाने की अपेक्षा है,
उसी तरह स्वप्न से वास्तविकता में जाने की अपेक्षा है ।
हर रात के बाद सवेरा आता है,
हर सवेरे के साथ नई अभिलाषा दस्तक देती है ।
आज भी मन में उसे सच करने की चाह जागती है,
अभिलाषा का कोई अंत नहीं होता,
अभिलाषा का वास्तविकता से कभी संगम नही होता,
बिना अभिलाषा जीने का मतलब नहीं होता ।
हर सवेरे में नई अभिलाषा का पैगाम,
रोज उसे सच करने का इकराम ।
हर अभिलाषा है गुमनाम,
कैसे दूँ हर अभिलाषा को नया नाम ?
इनका बेनाम होना ही तो है, सुकून का पैगाम,
हाँ यह अभिलाषा है,
मेरी भी अभिलाषा है ।

राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका



श्री सत्यम कुमार
लेखापरीक्षक



“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः” अर्थात् जहाँ नारी की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। न जाने ऐसे कितने ही श्लोक, मंत्र और लोकोक्तियों का संकलन, विवरण हमारे वेद-उपवेद, महान ग्रंथों एवं स्मृति आदि में हैं। वास्तव में, नारी ही इस सृष्टि की रचनाकार, पालनहार एवं आधार है। इसलिए कहा गया है कि “नारी माता अस्ति, नारी कन्या अस्ति, नारी भगिनी अस्ति”।

विकास राष्ट्र की नींव है। नारी के विकास के बिना राष्ट्र का विकास असंभव है। इसलिए, जब तक हम अपनी आधी जनसंख्या का विकास नहीं कर लेते, तब तक हम एक

विकसित राष्ट्र की परिकल्पना नहीं कर सकते। तभी भारत के पूर्व राजनयिक ने कहा था कि राष्ट्र तब तक सशक्त नहीं हो सकता है, जब तक इसकी नारी जनसंख्या को सशक्त न किया जाए। भारतीय समाज में, सामाजिक इतिहास में नारी की भूमिका उल्लेखनीय है। नारी का सम्मान करना एवं उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति है। एक विडम्बना यह भी है कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यंत विरोधाभासी रही है। एक तरफ तो उसे शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है तो दूसरी ओर बेचारी अबला भी कहा जाता है। सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यंत

महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उसी के बल बूते पर भारतीय समाज खड़ा है। नारी ने भिन्न-भिन्न रूपों में अनेक भूमिकाएँ निभाई हैं। चाहे वह सीता हो, झाँसी की रानी या इन्दिरा गाँधी हो।

नारी विधाता की सर्वोत्तम और नायाब सृष्टि है। नारी की सूरत और सीरत की पराकाष्ठा और उसकी गहनता को मापना दुष्कर ही नहीं अपितु नामुमकिन है। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक जगत में नारी के विविध स्वरूपों का न केवल बाह्य अपितु अंतर्गमन के गूढ़तम भाव सौन्दर्यात्मक स्वरूप का भी रहस्योद्घाटन हुआ है। नारी वह सौंदी मिट्टी की महक है जो जीवन रूपी बगीचे को महकाती है। नारी के लिए यदि यह कहा जाए कि यह “विविधता में एकता” है तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

लेकिन आज की विषय-वस्तु यह है कि आज वैश्वीकरण, इंटरनेट-तकनीकीकरण एवं आधुनिकीकरण की दुनिया में चीजें तेजी से बदल रही हैं। पहले के मुकाबले हम लोग ज्यादा उन्नत, अधिक विकसित तो हुए पर पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में हम भारतीयों का कहीं न कहीं नैतिक पतन हुआ है। आज इस युग में भी नारी-समाज सुरक्षित नहीं है जो कि एक चिंतनीय विषय है। हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि एक स्त्री के अपमान या प्रताड़ने से ही रावण का साम्राज्य सहित विनाश हुआ था, महाभारत जैसा महायुद्ध हुआ था। यह बात सत्य है कि हमारा समाज एक पितृसत्तात्मक समाज है परंतु स्त्रियों का शोषण, अपमान, उत्पीड़न यह न्यायोचित तथा तर्कसंगत भी नहीं है।

हमारी वैदिक और सनातन संस्कृति में नारी को तो पूजनीय माना गया है जिसके सामने खुद भगवान और देवतागण नतमस्तक हैं। जिस प्रकार हम विद्या के रूप में माँ

सरस्वती की अराधना करते हैं, उसी प्रकार हम धन-वैभव के रूप में माँ लक्ष्मी, धरा के रूप में धरती माँ को ही पूजते हैं। कहा गया है, “जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी” अर्थात् माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी महान है। जो कि नेपाल राष्ट्र का ध्येयवाक्य भी है।

प्रश्न तो यह है कि आजकल आए दिन अखबार में, सोशल मीडिया पर जिस प्रकार महिलाएँ यौन शोषण, सामाजिक उत्पीड़न का शिकार होती हैं, वह एक गंभीर मुद्दा है। कारण चाहे जो भी हो कि हम लोग पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे हैं या कुछ असामाजिक तत्वों पर स्थानीय प्रशासन की पकड़ नहीं है। सरकार ने महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक योजनाएं चलाई परंतु किसी ने सार्थक रूप नहीं लिया। सिर्फ आरक्षण दे कर या योजनाओं – प्रोत्साहन से कानून बनाकर हम यह भेद समाप्त नहीं कर सकते। जब तक कुछ पुरुष-वर्ग अथवा रूढ़िवादी लोगों की मानसिकता नहीं बदलेगी तब तक हम एक आदर्श समाज एवं राष्ट्र की कल्पना नहीं कर सकते।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम मर्यादा पुरुषोत्तम राम, कृष्ण, भरत आदि के वंशज हैं। आज हमारे देश की महिलाएँ हर एक क्षेत्र, चाहे वह शिक्षा हो, व्यवसाय, चिकित्सा, सेना, राजनीति आदि में पुरुषों के साथ कदम मिलाकर चल रही हैं। आज महिलाएँ आसमान और अंतरिक्ष को भी छू रही हैं। इसलिए, आज हम लोगों को (स्त्रियों के प्रति) नजरिया बदलने की जरूरत है। हम बिना नारी के उत्थान के, विकसित भारत नहीं बना सकते। □

कौआ और कोयल रंग में एक समान होते हैं। जब तक ये बोलते नहीं तब तक इनकी पहचान नहीं हो पाती। लेकिन जब वसंत ऋतु आती है, तो कोयल की मधुर आवाज़ से दोनों का अंतर स्पष्ट हो जाता है।

– रहीम दास

अद्भुत असम



श्री अभिनव कुमार चौधरी
लेखापरीक्षक

हरित धरणी की कोख में, असम की धारा बही,
ब्रह्मपुत्र की लहरों में, सुंदरता की छाया छही।
पर्वत, वन और झरनों से, सजी धरा की छवि,
प्राकृतिक सौंदर्य की छाँव में, जग को लुभाए सम विवि।

कामाख्या देवी का मंदिर, शक्ति का केंद्र है प्यारा,
धार्मिक महत्व से भरा, आस्था का स्रोत हर पारा।
असम की भाषा मधुर, सुर और शब्दों की रचना,
भाषा की मिठास में है बसी, सांस्कृतिक धरोहर की सचना।

भोगाली, बिहू की धूम, खुशियों का पर्व मनाते,
हर खुशी की बौछार में, रंग-बिरंगे पर्व सजाते।
खिचड़ी, पकोरा, और पिठा, स्वाद से है भरपूर,
असम के खाद्यपेय की, छटा अनुपम, महके हैं सरवरपूर।

आर्थिक प्रगति का द्वार, चाय बागानों से है खुला,
हरे भरे अरण्यों से, असम को नवमान है मिला।
उद्योग और व्यापार ने, विकास की राह दिखलाई,
प्राकृतिक संसाधनों की बहुलता ने समृद्धि सहस ही लाई।

माजुली की मिट्टी में, नव कला इतिहास है रचा,
सांस्कृतिक धरोहरों की, परंपरा में बसा सुर्लचा।
आंबारी के चमत्कार, है सोनितपुर की छाँव,
अहोम वीरों के वीरता की, गाथा से भरा हर गाँव।



अहोम वीरों की वीरता, इतिहास में है अमर,
चिलाराई और जोयमति ने, वीरत्व साधा बन तमर।
उन्नति की भूमि में, गाथाओं की अमर याद,
वीर योद्धाओं की परंपरा, इस भूमि की गर्वित आद।

असम की पावन धरती पर, एक शूर योद्धा की गाथा,
लाचित बोरफुकन ने थी रची, एक अद्भुत युद्ध की जाथा।
इसी पुण्य भूमि के योद्धा, धर्म के रखवाले,
शत्रु को था हराया, वीरता का आदर्श पाले।

सराईघाट के संग्राम में, फुर्तीला भीम समंद,
मुगलों को था धूल चटाया, पराक्रमी लाचित प्रचंड।
वीर योद्धा सम्राट, इतिहास में अमर नाम,
जिनकी वीरता की गूंज, फैल गई बन प्राण।

यशोधरा: त्याग की प्रतिमूर्ति



श्री मनीष भास्कर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



यशोधरा नाम सुना है कभी ? जी हाँ वो सिद्धार्थ वाली यशोधरा अपने माता-पिता की लाडली यशोधरा जी हाँ, राजकुमारी यशोधरा ।

एक ऐसा नाम, जिसके बिना बुद्ध अधूरे थे, जिसका त्याग, जिसका तप, जिसका दुःख, जिसका संताप और उसी ताप, त्याग, तपस्या से निकले बुद्ध

मनुष्य के जीवन में उसकी वामांगी का महत्वपूर्ण योगदान है। एकतरफ हम सीता को देखते हैं जिसने साथ रहकर हर पल अपने पति का साथ दिया, दूसरी तरफ

यशोधरा, जिसे जीवन भर ये मलाल रहा कि मेरे स्वामी ने मुझपर विश्वास नहीं किया ।

सखी वो मुझसे कहकर जाते,
तो क्या मुझको अपनी पथबाधा ही पाते ?
सखी, वो मुझसे कहकर जाते

नई-नई विवाहिता जब ससुराल आती है, मन में उमंग, जोश, योजनाएँ जाने क्या-क्या संजोये रहती है। यशोधरा का मन भी हिलोरे मारता होगा, जीवनभर साथ देने के विचार से वह भी विह्वल हो उठती होगी; किन्तु यहाँ उसे मिला एक ऐसा पति जिसे रंग-रास में कोई उत्साह नहीं था। पत्नी के सोलह शृंगार के बावजूद, तरह-तरह के व्यंजन बनाने के बावजूद, शारीरिक-मानसिक समस्त सुखों का भोग कराने के बावजूद, एक नवजात जनने के बावजूद रिझा नहीं पाई यशोधरा सिद्धार्थ को ।

एक सुनसान अंधेरी रात में, राहुल को यशोधरा के सहारे छोड़ चले जाते हैं सिद्धार्थ अपने बुद्ध बनने की तलाश में। इतिहास ने इसे 'महाभिनिष्क्रमण' कहा, पर इतिहास नहीं देख पाया यशोधरा के दर्द को, नहीं समझ पाया यशोधरा के अंतःकरण को ।

यशोधरा, अपनी सखियों के साथ बैठ कहती है, कैसे एक क्षत्रिय कन्या होने का भी फर्ज नहीं निभा पाई वो ।

स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में -

क्षात्र धर्म के नाते सखी,
वे मुझसे कहकर जाते ।

दुःख, विरह, संताप की अग्नि में अपने राहुल को साथ ले, उसकी उटपटांग सवालियों में उलझ-उलझ कर, इस उम्मीद के साथ कि एक न एक दिन स्वामी लौट आएँगे, मुझे फिर से गले लगाएँगे और अपनी इस दुविधा को फिर से अपनाएँगे, यशोधरा तपती जा रही है। एकांत में गाती है, चिल्लाती है, पुकारती है, आओ हो वनवासी ! अब गृह भार नहीं सह सकती देव तुम्हारी दासी ।। आओ हो वनवासी

करुण पुकार सुनकर, समझकर, आते हैं बुद्ध अपने गाँव वापस । पूरा गाँव जाता है बुद्ध से मिलने, दर्शन करने; किन्तु नहीं जाती है यशोधरा । आज यशोधरा बंद कमरे में फिर से सोलह शृंगार कर रही है, एक नवविवाहिता की तरह पति से मिलने की उत्कंठा, मन ही मन मुस्कुरा रही है पगली ।

लोग-बाग चहक रहे हैं, बच्चे दौड़े जा रहे हैं, सब यशोधरा से कह रहे हैं, चलो ! तुम्हारे स्वामी आ गए !! तुम्हारी तपश्चर्या पूर्ण हुई चलो, दर्शन करो । इधर मन में उत्साह, पर मुख से कठोर हो यशोधरा कहती है, नहीं, मैं न जाऊँगी । उन्होंने मुझे छोड़ा है, वो आएँगे आज इस दरवाजे पर ।

बुद्ध आते हैं, किन्तु पति बनकर नहीं एक भिक्षुक बनकर मात ! भिक्षाम देहि ! निष्ठुर भाव से यशोधरा देखती रह जाती है अपने सिद्धार्थ को जो अब बुद्ध हो चुका है ।

अनुनय-विनय करती है पगली, आ जाओ स्वामी अब और नहीं । कितना सताओगे, कितना तपाओगे, अंदर आ जाओ प्रभु ! किन्तु नहीं, बुद्ध फिर कहते हैं – मात ! भिक्षाम देहि ! पूरा जीवन ही जिसकी याद में दान दे दिया, उसके पास बचा क्या था देने को । बुद्ध कहते हैं, जो सबसे प्रिय हो उसे दे दो, सखे ।

सबसे प्रिय ! हाय रे नियति, जिस राहुल के सहारे यशोधरा जी रही थी, अब उसपर भी उसका अधिकार नहीं रहा । उसने राहुल का त्याग किया और जोर-जोर से पुकारने लगी-

“बुद्धं शरणम् गच्छामि
धम्मं शरणम् गच्छामि
संघं शरणम् गच्छामि”

(साभार : “यशोधरा” – मैथिलीशरण गुप्त)

एक विचार लो, उस विचार को अपना जीवन बना लो, उसके बारे में सोचो, उसके सपने देखो, उस विचार को जियो, अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों, शरीर के हर हिस्से को उस विचार में डूब जाने दो, और बाकी सभी विचार को किनारे रख दो, यही सफल होने का तरीका है।

– स्वामी विवेकानंद

दीद



श्री सुब्रत विश्वास
सहायक पर्यवेक्षक

कल जिसे बाज़मो देखा था वो गुलाब-सा था,
रेशम-सी बाल थी, चेहरा माहताब-सा था ॥

हो गए हम उसकी जब नैन से नैन मिले,
उसकी हर लफ़्ज़ मेरे गीतों में खुशबू सा था ॥

रौनक - ए - महफ़िल कुछ और ही थी उसके आने के बाद
हर अदाओं में उसको अजब भोलापन - सा था ॥

थोड़ी सी गुफ़्तगू में ही वो मेरे खयालों में बस गयी।
मेरे साकी के दो नैन जाम सा था ॥

अपनी अदाओं से जब वह गाने लगी महफ़िल में
अजब - सी मंजर, कोयल सी आवाज, मुझे शब-ए-रिफ़ाकत ॥

ओल



श्री सत्येन्द्र पाण्डेय
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



इसे सुरन अथवा जिमीकंद के नाम से भी जाना जाता है। इसके कई प्रकार की सब्जियां, व्यंजन और आचार बनाए जाते हैं। कहीं-कहीं इसकी मुलायम पत्तियों को साग के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। अगर ओल की सब्जी बेहतर ढंग से अर्थात् खट्टा, नींबू अथवा कच्चा आम डाल कर नहीं बनाया गया तो फिर यह उपभोगी-मनुष्य को घंटों भर के लिए मुँह, तालु, गले एवं जबड़े में गुदगुदीपन, कुलकुलाहट एवं अन्य अप्रिय क्रिया-कलाप से परेशान करता रहेगा। उत्तर बिहार में यह जंगली पौधा है जो घर के आसपास उग जाता है जबकि मध्य बिहार में ओल की खेती होती है। दोनों की

गुणवत्ता में काफी अंतर होता है। कई क्षेत्रों में पाये जाने वाले ओल काफी खतरनाक होते हैं जबकि कई क्षेत्रों के ओल बढ़िया गुणवत्ता वाले होते हैं।

ओल स्वादिष्ट और वैज्ञानिक-दृष्टिकोण से काफी फायदेमंद होता है। इसमें फॉस्फोरस पर्याप्त मात्रा में पाई जाती है। बड़े-बुजुर्गों सहित आयुर्वेद द्वारा कहा गया है कि अगर किसी ने साल में एक बार ओल की सब्जी खा ली तो शरीर में जितनी फॉस्फोरस की मात्रा प्रत्येक वर्ष के लिए चाहिए उतनी प्राप्त हो जाती है, इससे आँखों की रोशनी बढ़ती है तथा कई प्रकार की बिमारियों से भी राहत मिलती है। ओल की खेती को बढ़ावा देने के लिए बिहार के कृषि-विभाग ने तो कई तरह के अभियान चला रखे हैं। ओल असम सहित कई अन्य राज्यों के सब्जी-मंडियों में सालों भर आसानी से मिल जाता है। इसकी कीमत लगभग 100 रुपये से 200 रुपये प्रति किलो तक होती है। कई राज्यों में दीपावली के अवसर पर ओल से सब्जी, भर्ता एवं कई अन्य व्यंजन को जरूर बनाया जाता है। □

मृत्यु के बाद क्या ?



श्री सरोज शेखर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

गौरतलब है कि धरती पर जो आया है उसे जाना ही होगा। परंतु यह भी तो सत्य है कि जो जाता है उसे पुनः आना ही होगा। ये आने और जाने के खेल में न जाने कितने दिल टूटते हैं। हम कितने प्यारों को खो देते हैं। आए दिन हम सुनते हैं कि वो न रहा, वो भी चला गया। क्या कोई बता पाया कि वो गया तो कहाँ गया, और कोई इस धरा पर आया तो कहाँ से आया ? बड़ी ही कशमकश है, न कोई वैज्ञानिक बता पाया कि लोग जाते तो जाते कहाँ हैं, और आते हैं तो आते कहाँ से हैं।

कहते हैं, आत्मा अजर, अमर अविनाशी है, तो क्या आत्मा शरीर त्याग के बाद भी अपने को पहचान पाती है और अपनों के करीब ही रहती है ? यह भी अजीब सी उलझन है, यदि अपने को पहचान पाती है, तो ऐसा संभव हो सकता है कि शरीर त्याग के बाद भी वह अपनों की बीच ही रहती हो या किसी दूसरे शरीर में प्रवेश कर पुनः अपनों के बीच ही उपस्थित रहती हो। मेरा मानना है कि आत्मा शरीर बदलने के

क्रम में पूर्व के विभिन्न शरीरों के त्याग का लेखा-जोखा भी रखती होगी और क्रमबद्ध धरती पर उपस्थित हर जीव में एक बार समाहित हो कर इस जीवन और मरण की कठोर तपस्या से निजात पाती होगी। क्या यही मोक्ष है ?

कहने का मतलब यह है की धरा पर उपस्थित हर प्राणी में मानव की आत्मा बसती है, चाहे वो छोटे से छोटा प्राणी क्यों न हो, अर्थात् किसी भी जीव की हत्या, चाहे छोटी से छोटी ही क्यों न हो, उसे मनाव हत्या से कम नहीं आँका जा सकता है। अतः जीव हत्या पर पूर्णतः प्रतिबंध हो। इसके इतर एक दूसरी बात यह भी है कि यह शोध का विषय होना चाहिए। पता नहीं इस पर कार्य चल रहा है या नहीं, परंतु इस उलझन को सुलझाना नितांत आवश्यक है कि मृत्यु के बाद फिर क्या है ? □

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है।

– महात्मा गांधी

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।

– आचार्य विनोबा भावे

हिंदी सप्ताह -2023 की कुछ झलकियाँ



हिंदी सप्ताह-2023 के समापन समारोह में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ

